

# नेपालमा आदिवासी अधिकार

नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू

सम्पादन सल्लाहकार

शान्ति कुमारी राई दिनेश कुमार घले  
शंकर लिम्बू भिम राई  
अमृत योन्जन-तामाङ

सम्पादक  
टहल थामी  
गोबिन्द छन्त्याल

नेपालमा आदिवासी अधिकार

नीतिगत अवस्था,  
चुनौती र अवसरहरू

सम्पादक  
टहल थामी, गोबिन्द छन्त्याल



ISBN 9879937913539



9 879937 913539

# नेपालमा आदिवासी अधिकार

नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू

सम्पादन सल्लाहकार

शान्ति कुमारी राई

दिनेश कुमार घले

शंकर लिम्बू

भिम राई

अमृत योञ्जन-तामाङ

सम्पादक

टहल थामी

गोबिन्द छन्त्याल



नेपालमा आदिवासी अधिकारः

नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू

प्रकाशकः नेपालका आदिवासीहरूको मानव अधिकार सम्बन्धी

वकिल समूह (लाहूर्निप)

अनामनगर, काठमाडौं ।

पो.ब.नं.: १११७९

फोन: +९७७ ०१ ४२६६५१०

इमेल: [lahurnip.nepal@gmail.com](mailto:lahurnip.nepal@gmail.com)

वेबसाइट: [www.lahurnip.org](http://www.lahurnip.org)

© LAHURNIP, 2017

लेआउट: खापुङ, क्रियसन

अनामनगर, काठमाडौं ।

ISBN: 978-9937-9135-3-9

---

Indigenous Peoples Rights in Nepal: Policy Status,  
Challenges and Opportunities

Editorial Advisors: Shanti Kumari Rai, Dinesh Kumar Ghale,  
Shankar Limbu, Bhim Rai, and Amrit Yonjan-Tamang.

Edited by Tahal Thami/Gobinda Chhantyal

## संक्षेपीकरण

|           |   |
|-----------|---|
| आईएलओ     | अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठन                            |
| आजउराप्र  | आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान            |
| आ.व.      | आर्थिक वर्ष   |
| ऐऐ        | ऐजन ऐजन   |
| गाविस     | गाउँ विकास समिति                                      |
| जिविस     | जिल्ला विकास समिति                                    |
| नपा       | नगरपालिका   |
| नि.नं.    | निर्णय नम्बर  |
| नेकपा     | नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी                               |
| ने.का.प.  | नेपाल कानून पत्रिका                                   |
| नं.       | नम्बर   |
| पृ.       | पृष्ठ   |
| वि.       | विरुद्ध   |
| यूएनडीप   | आदिवासी अधिकारसम्बन्धि संयुक्त राष्ट्रसंघीय घोषणापत्र |
| रा.शि.आ.  | राष्ट्रिय शिक्षा आयोग                                 |
| लाहुरिप   | नेपालका आदिवासीहरूको मानव अधिकार सम्बन्धी वकिल समूह   |
| वि.सं.    | विक्रम संवत्  |
| सी.बी.आर. | समुदायमा आधारित पुनर्स्थापना                          |
| सं.       | सम्पादक   |

## Abbreviation

|                  |   |
|------------------|---|
| AD               | Anno Domini   |
| ADB              | Asian Development Bank  |
| AGRBS<br>Sharing | Access to Genetic Resources and Benefit                                       |
| AIPP             | Asia Indigenous Peoples Pact  |
| CA               | Constituent Assembly  |
| CBD              | Convention on Biological Diversity  |
| CBR              | Community Based Rehabilitation  |
| CBS              | Central Bureau of Statistics  |
| CEDAW            | Convention on the Elimination of all Forms<br>of Discrimination against Women |
| CERD             | Convention on the Elimination of All Forms<br>of Racial Discrimination        |
| COP              | Conference of the Parties   |
| CPN              | Communist Party of Nepal  |
| CRC              | Convention on the Rights of the Child   |
| CSR              | Corporate Social Responsibility   |
| CSRDSP           | Committee for State Restructuring and<br>Division of State Power              |

|          |  |
|----------|--|
| DDC      | District Development Committee                                       |
| DFID     | Department for International Development                             |
| EA       | Electricity Act  |
| EIA      | Environment Impact Assessment  |
| FPIC     | Free, Prior and Informed consent                                     |
| GI       | Governance Index   |
| GL       | Generation License   |
| GoN      | Government of Nepal  |
| GSI      | Gender and Social Inclusion  |
| HDI      | Human Development Index  |
| HLSRRC   | High Level State Restructuring Committee                             |
| ICCPR    | International Covenant on Civil and Political Rights                 |
| ICESCR   | International Covenant on Economic, Social and Cultural Rights       |
| ICIMOD   | International Centre for Integrated Mountain Development             |
| IEE      | Initial Environmental Examination                                    |
| IFAD     | International Fund for Agricultural Development                      |
| IFC      | International Finance Corporation                                    |
| ILO      | International Labour Organisation                                    |
| INC      | Indigenous and Nationalities Commission                              |
| IPPs     | Independent Power Producers  |
| IPs      | Indigenous Peoples   |
| IWGIA    | International Work Group for Indigenous Affairs                      |
| LAHURNIP | Lawyers' Association for Human Rights of Nepalese Indigenous Peoples |
| LGBTI    | Lesbian, Gay, Bisexual, Transgender & Intersex                       |
| LTR      | Lands, Territories and Resources                                     |
| MAT      | Mutually Agreed Terms  |
| MoAD     | Ministry of Agricultural Development                                 |
| MoFSC    | Ministry of Forest and Soil Conservation                             |
| MoFSC    | Ministry of Forests and Soil Conservation                            |
| MoLJPA   | Ministry of Law, Justice & Parliamentary Affairs                     |

|               |   |
|---------------|---|
| MoPE          | Ministry of Population and Environment                          |
| MW            | Mega Watt   |
| NBSAP         | National Biodiversity Strategy and Action Plan                  |
| NC            | Nepali Congress   |
| NEFIN         | Nepal Federation of Indigenous Nationalities                    |
| NESAC         | Nepal South Asia Centre   |
| NFDIN         | National Foundation for Development of Indigenous Nationalities |
| NPC           | National Planning Commission                                    |
| NTFPs         | Non-Timber Forest Products                                      |
| PES           | Payment for Ecosystem Services                                  |
| PI            | Poverty Index   |
| SL            | Survey License  |
| SOM/P         | Standard Operating Manual/Procedures                            |
| SRHLRC        | State Restructuring High Level Recommendation Commission        |
| UCPN (Maoist) | Unified Communist Party of Nepal (Maoist)                       |
| UML           | Unified Marxist Leninist  |
| UN            | United Nations  |
| UNCED         | United Nations Conference on Environment and Development        |
| UNDP          | United Nations Development Programme                            |
| UNDRIP        | United Nations Declaration on the Rights of Indigenous Peoples  |
| UNPFII        | United Nations Permanent Forum on Indigenous Affairs            |
| VDC           | Village Development Committee                                   |
| WB            | World Bank  |
| WRA           | Water Resource Act  |
| WSSD          | World Summit on Sustainable Development                         |

## प्रकाशकीय

संविधानसभामार्फत संविधान निर्माणलाई लोकतन्त्रको उत्कृष्ट नमूना मानिन्छ। इतिहासमा यस्ता अवसर विरलै आउँछ। नेपालको सन्दर्भमा पनि नेपाली जनताको लामो संघर्षपछि यो अवसर जुरेको हो। तर जसरी संविधानसभाले आम जनता तथा समुदायहरूको अधिकारका आवाजहरूको सम्बोधन गर्नुपर्थ्यो, त्यो हुन सकेन। संविधानसभाबाट बनेको संविधानमासमेत आदिवासीलगायतका समुदायहरूको अधिकार सुनिश्चित हुन नसक्दा असन्तुष्टिहरू भन्न बढेका छन्। त्यसको समाधान बेलैमा निकाल्न नसके देश भयंकर दुर्घटनामा पर्न सक्छ। त्यसरी संवैधानिक अधिकारबाट वन्चित एक समूह हो आदिवासी। ती समूहहरूको अधिकारका सम्बन्धमा संविधानमा भएका व्यवस्था र उनीहरूले चाहेको अधिकारका सम्बन्धमा गत पुष २२-२३, २०७३ (6-7 Januray 2017)मा काठमाडौंमा बृहत् सम्मेलनमा छलफल भएको थियो। सो कार्यक्रमको आयोजना गर्न पाउँदा लाहुर्निप गर्व महशूस गर्दछ।

सो कार्यक्रम आयोजनामा विभिन्न व्यक्ति, व्यक्तित्व तथा संघसंस्थाहरूको अमूल्य सहयोग लाहुर्निपलाई मिलेको थियो। यसरी सहयोग तथा सल्लाह सुभाक् दिनुहुने डा. कृष्ण भट्टचन र डा. नवीन राईप्रति हामी आभारी छौं। त्यसैगरी United Nations Permanent Forum on Indigenous Issues (UNPFII) का उपाध्यक्ष Mr. Raja Devasish Roy, सोही निकायकी सचिवालयबाट पाल्नु भएकी Ms. Julia Raavad, र International Work Group for Indigenous Affairs (IWGIA) बाट कार्यक्रममा सहभागी बन्न आउनु भएका Mr. Christian Erniप्रति लाहुर्निप आभारी छ। त्यस्तै कार्यक्रमलाई सफल पारिदिन सहयोग गर्नुहुने अमृत योन्जन तामाङ, यशोकान्ती भट्टचन, डम्बर लोहोरुङ, डम्बर तेम्बे र नारायण निडलेखुप्रति पनि धन्यवाद व्यक्त गरिन्छ।



सो कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न गर्नका लागि महत्वपूर्ण सहयोगका United Nations Permanent Forum on Indigenous Issues (UNPFII), International Work Group for Indigenous Affairs (IWGIA), International Fund for Agricultural Development (IFAD), United Nations Development Programme (UNDP) लाई पनि धन्यवाद टक्रयाइन्छ । साथै कार्यक्रममा उपस्थित भई कार्यक्रमको शोभा बढाई दिनु भएकोमा राष्ट्रिय मानवअधिकार आयोगका अध्यक्ष माननीय अनुपराज शर्मा, आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठानका उपाध्यक्ष चन्द्रबहादुर गुरुङ र सदस्यसचिव गोविन्द माझीप्रति लाहुर्निप कृतज्ञ छ । त्यसै गरी नेपाल आदिवासी जनजाति महासंघ, राष्ट्रिय आदिवासी जनजाति महिला महसंघलाई पनि धन्यवाद साथै सो कार्यक्रममा गरिमाय उपस्थितिका लागि माननीय सांसदहरू, विभिन्न संघसंस्थाका प्रतिनिधिहरू, बुद्धिजीविहरू, राजनीतिक दलका प्रतिनिधिहरू, विभिन्न राजदूतावासका प्रतिनिधिहरू, व्यापारिक क्षेत्रका प्रतिनिधिहरू, सरकारी निकायका प्रतिनिधिहरू, संयुक्त राष्ट्रसंघलगायत अन्तर्राष्ट्रिय निकायका प्रतिनिधिहरू र सामाजिक अभियन्ताहरूप्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन गरिन्छ ।

यस पुस्तकमा सो कार्यक्रममा प्रस्तुत कार्यपत्रहरू समावेश गरिएका छन् । कार्यक्रममा कार्यपत्र प्रस्तुत गरिदिनुहुने विभिन्न मन्त्रालयका प्रतिनिधि-कर्मचारीहरू तथा बुद्धिजीविहरूप्रति पनि लाहुर्निप आभारी छ । साथै यस पुस्तक प्रकाशनमा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूपमा योगदान गर्ने सबैप्रति हामी आभार व्यक्त गर्दछौं ।

शान्ति कुमारी राई  
अध्यक्ष

## विषय सूची/Content

संक्षेपीकरण/Abbreviation

प्रकाशकीय

### लैंगिक समानता, संस्कृति र भाषा

नेपालमा महिलाको अवस्था र सुधारका प्रयासहरू

नारायण बहादुर कुँवर ३

आदिवासी जनजाति महिला र बालबालिकाका सन्दर्भमा

नेपाल सरकारको नीति र अन्तर्राष्ट्रिय प्रावधानहरू

कैलाश राई २९

नेपालमा मातृभाषाको उपयोग: नीतिगत

र कार्यगत अवस्था

डा.डिल्लीराम रिमाल ५३

मातृभाषा, मातृभाषामा शिक्षा

र संस्कृतिसम्बन्धि राज्यको नीति

अमृत योन्जन-तामाङ १०५

# संविधान, कानून र नयाँ बन्ने कानूनहरूमा सामुहिक र आदिवासीको अधिकार

Legal framework on the rights of  
indigenous peoples in Nepal:  
Analysis of the gaps and the way forward  
Toyanath Adhikari 161

आदिवासी जनजाति मानवअधिकारसँग सम्बन्धित  
नीतिगत व्यवस्था र क्रियाकलापहरूको विश्लेषण  
सरिता ज्ञवाली १८१

प्रचलित कानूनमा आदिवासी जनजाति सम्बन्धी व्यवस्था  
शंकर लिम्बू १९९

## भूमि अधिकार, संरक्षित क्षेत्रहरू र जलवायु परिवर्तन

भूमिसुधार र व्यवस्थापनको क्षेत्रमा भएका  
नीतिगत व्यवस्थाहरूको विश्लेषण  
लीलानाथ दाहाल २१९

नेपालका अदिवासी जनजातिको भूमि र भूमि अधिकार  
नन्द कन्दड्वा २५७

Policy Analysis on Indigenous Peoples

and Forest Resources in Nepal  
Dhananjaya Lamichhane 289

Ensuring Indigenous Peoples' Rights in Policies  
on Forest, Water and other Natural Resources:  
Issues, Challenges and Way  
Dr. Krishna B. Bhattachan 309

## व्यापार र मानवअधिकार, अग्रिम जानकारीसहितको मन्जुरीको अधिकार, संघीयता र राज्य पुनर्संरचना

आदिवासी/जनजाति अधिकार संरक्षण तथा  
विकासका लागि गरिएका प्रयास, समस्या र सुझावहरू  
लीला अधिकारी ३४७

State Restructuring and Federalism in Nepal  
Krishna Hachhethu ३६७

Policies related to the Electricity  
Development in Nepal  
Sagar Raj Goutam 383

Community Engagement in  
Hydropower Development: Issue and Challenges  
Padmendra Shrestha 395

अनुसूचीहरू/Annexes ४१५

लैंगिक समानता, संस्कृति र भाषा

# मातृभाषा, मातृभाषामा शिक्षा र संस्कृति सम्बन्धी राज्यको नीति

अमृत योन्जन-तामाङ

## ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भाषा राष्ट्रको अमूल्य सम्पदा हो । ज्ञान प्राप्त गर्ने प्रमुख स्रोत पनि भाषा नै हो । भाषा संस्कृतिको वाहक पनि हो । एउटा भाषामा भएको ज्ञान र संरचनालाई अर्को भाषाले विस्थापित गर्न सक्दैन । नेपालमा धेरै भाषा बोलिन्छन् । बृहभाषिकता नेपालको विशेषता बनेको छ । तर नेपालमा राजनीतिक एकीकरणको नाउँमा एक भाषा, एक धर्म र एक संस्कृतिको विकास गरियो । “एउटा भाषा, एउटा भेष प्राणभन्दा प्यारो छ” यो शाहकालीन नीति थियो । यस वाक्यबाट नेपालमा एक भाषिक र एक साँस्कृतिक नीति थियो भन्ने प्रष्ट हुन्छ । अन्य कुनै प्रमाण चाहिँदैन । यस नीतिले शासक जातिको भाषा र संस्कृतिलाई मात्र पोष्ने र अरु भाषा, संस्कृति, सभ्यता आदिलाई खेद्ने काम गर्‍यो ।

वि. सं. १८०० मा नुवाकोट विजयपछि, शुरु भएको शाहकाल २०६२-

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १०६

२०६३ मा गणतन्त्र स्थापना भएपछि अन्त्य भयो । दोस्रो जनआन्दोलनको ऐतिहासिक सफलतापछि बनेको नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ ले भाषिक समनताको व्यवस्था गर्‍यो । नेपालको संविधान, २०७२ को धारा १८ ले पनि यसलाई निरन्तरता दियो । वर्तमान संविधानले बहुभाषिक नीतिको व्यवस्था पनि गरेको छ ।<sup>69</sup> सिद्धान्ततः नेपाल बहुभाषिक तथा बहुसाँस्कृतिक नीतिमा प्रवेश गरेको छ र बहुभाषिक शिक्षा नीति पनि स्वीकारेको अवस्था छ । नेपालको संविधान २०७३ मा भनिएको छ-

“नेपालमा बसोबास गर्ने प्रत्येक नेपाली समुदायलाई आफ्नो भाषा, लिपि, संस्कृति, साँस्कृतिक सभ्यता र सम्पदाको सम्बर्धन र संरक्षण गर्ने हक हुनेछ ।” धारा ३२(३)

फर्केर अलिकति इतिहास हेरौं । रणबहादुर शाहभन्दा अगाडि भाषा नीतिको अध्ययन अनुसन्धान हुन सकेको छैन । रणबहादुर शाहको पालामा लिम्बू भाषा लेखे पनि लिपिमा नलेख्नु भनी १८४४ भाद्रवदी ६ रोज ३ का दिन लिम्बूवानमा सनद<sup>70</sup> जारी गरेको पाइन्छ । यस सनदमा लेखिएको छ-

“..... उप्रान्त अधि अधि लेष्याका बेहोरावाट नलेखी.....  
हजुर्मा आउन्या पत्र जत्ति हो तति आफ्नै भाषा गरी  
नागरीमा लेख्नुया गर्नु ..”

यसरी राज्यले लिम्बूलगायतका आदिवासी समुदायको लिपि प्रयोगमा बन्देज लगाएर विभेदको नीतिको श्रीगणेश गरेको थियो । यसपछि २५० वर्षसम्म यस सनदले परम्पराको रूप धारण गरेको पाइन्छ । यो सनद जारी भएपछि आदिवासी लिपिमा मातृभाषा लेख्न कार्य प्रायः बन्द भयो । यसपछि मातृभाषामा लेखिएका कागजात अदालतमा मान्य नहुने गरी सनद जारी गरियो । पछि क्रमशः मातृभाषाको प्रयोगमा पनि बन्देज लाग्न थाल्यो र मातृभाषामा लेख्नेलाई मृत्युदण्ड, सर्वस्वहरण,

69 नेपालको संविधान, २०७२, धारा ५१(ग)(७) ।

70 विरही काइँला (२०४९) लिम्बू भाषा र साहित्यको संक्षिप्त परिचय काठमाडौँ: नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ।

आजीवन कारावास, कैद आदि कारवाही गरिन्थ्यो ।<sup>71</sup>

सात सालको क्रान्तिपछि स्थापित प्रजातन्त्रिक काल र पञ्चायत काल र प्रजातन्त्र पुनर्स्थापना कालमा पनि मातृभाषीहरूले सामाजिक न्याय पाउन सकेनन् । नेपालको संविधान २००७, २०१५, २०१९ र २०४७ ले मातृभाषालाई समानताको हकबाट विभेद गरेको थियो । संविधानमा नै भाषिक समानताको अधिकार नभएपछि मातृभाषीहरूले सामाजिक न्याय पाउने कुरै भएन । यसरी मातृभाषीहरूले २५० वर्षको लामो कालखण्डमा अर्थात् २०६३ सम्म भाषिक न्याय संविधान तथा कानूनमासमेत पाएनन् । मातृभाषीहरू सामाजिक न्यायको लागि निरन्तर संघर्षरत रहे, लडिरहे । तत्कालीन सरकारहरूले केही प्रतिवद्धता जाहेर गरे पनि कार्यान्वयन भने गरेको देखिएन ।

सर्वप्रथम नेपाल अधिराज्यको संविधान, २०४७ ले नेपाल बहुभाषिक मुलुक हो, नेपालमा बोलिने सबै मातृभाषाहरू राष्ट्रिय भाषा हुन् भनेर स्वीकार्यो र मातृभाषामा विद्यालय संचालन गर्न पाइने हक पनि प्रदान गरेको थियो ।<sup>72</sup> तर यी धाराहरूको कार्यान्वयनको लागि सरकारले ठोस कार्ययोजना तथा कार्यक्रम तयार गर्न सकेन । प्राज्ञ बैरागी काइँलाको संयोजकत्वमा राष्ट्रिय भाषा नीति सुझाव आयोग बन्थ्यो र यसले आफ्नो प्रतिवेदन चैत्र २०५० मा बुझायो । तर यसलाई लागू गरिएन । यसै

71 चैतन्य सुब्बा र अन्य (२००२) 'राष्ट्रिय विकासमा आदिवासी/ जनजाति: मूल मुद्दा, व्यवधान र अवसरहरू' (दसौँ योजना २०५९-०६४ मा समावेशका लागि तर्जुमा गरिएको) काठमाडौँ: सर्वाङ्घिक विकास अध्ययन केन्द्र र अमृत योन्जन-तामाङ (२००६) नेपालका भाषाहरूको पहिचान, वर्तमान स्थिति र भाषा विकास योजना, काठमाडौँ: आदिवासी भाषाविज्ञान समाज ।

72 नेपाल अधिराज्यको संविधान २०४७ मा भाषा सम्बन्धी निम्न प्रावधान थियो- धारा ६(१) देवनागरी लिपिमा नेपाली भाषा नेपालको राष्ट्रभाषा हो । नेपाली सरकारी कामकाजको भाषा हुनेछ । धारा ११(२) नेपालका विभिन्न भागमा मातृभाषाका रूपमा बोलिने सबै भाषाहरू नेपालका राष्ट्रिय भाषा हुन् । धारा १८(१) नेपाल अधिराज्यमा बसोबास गर्ने प्रत्येक समुदायलाई आफ्नो भाषा, लिपि र संस्कृतिको संरक्षण र सम्वर्द्धन गर्ने अधिकार हुनेछ । धारा १८(१)(२) प्रत्येक समुदायले बालबालिकालाई प्राथमिक तहसम्म आफ्नो मातृभाषामा शिक्षा दिने गरी विद्यालय संचालन गर्न पाइनेछ ।



नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू • १०८

गरी नरहरि आचार्यको अध्यक्षतामा गठित 'रेडियो नेपालबाट राष्ट्रिय भाषाहरूमा समाचार प्रसारण गर्ने बारे सुभाउ समितिको प्रतिवेदन, २०५० र रामावतार यादवको संयोजकत्वमा गठित राष्ट्रिय भाषामा प्राथमिक शिक्षा प्रतिवेदन, २०५४ पेश भयो । यी प्रतिवेदनका सुभावावन्तरूप सरकारले रेडियो नेपालबाट केही भाषामा समाचार प्रसारण र पाठ्यक्रम विकास केन्द्रबाट ऐच्छिक विषयको रूपमा केही प्रमुख मातृभाषामा पाठ्यपुस्तक तयार गरी लागू गरेको थियो ।

यसै क्रममा नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानबाट अनुवादसहित मातृभाषाका कविता र लेखरचना प्रकाशित भएका थिए।<sup>73</sup> मातृभाषाका सामग्री नेपाली अनुवाद सहित प्रकाशन गर्ने परम्परालाई मोहन कोइराला उपकुलपति भएपछि बन्द गरिएको थियो र उपकुलपति बासुदेव त्रिपाठीको कार्यकालमा पनि पुनर्जीवित गरिएन । हाल पनि छैन । यसै गरी आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान (आजउराप्र) ऐन २०५७ लागू हुन अगाडि गठित आदिवासी जनजाति विकास समितिले भाषा सम्बन्धि केही अध्ययन तथा प्रकाशन गरेको पाइन्छ ।

यसै अवधिमा काठमाडौं नगरपालिकाले नेवारी र राजविराज नगरपालिका र धनुषा जिल्ला विकास समितिले मैथिली भाषामा कामकाज प्रारम्भ गरेकोमा सर्वोच्च अदालतले रोक लगाएको थियो । सर्वोच्च अदालतको निर्णयमा लेखिएको छ<sup>74</sup> -

काठमाडौं नगरपालिकामा आधिकारिक भाषाका रूपमा नेपाल भाषालाई तथा राजविराज नगरपालिका र जिल्ला विकास समिति धनुषाले मैथिली भाषालाई पनि कामकाजमा प्रयोगमा

73 नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानबाट प्रकाशित हुने कविता पत्रिकामा विभिन्न भाषाका कविता नेपाली अनुवादसहित र सयपत्री पत्रिकामा भाषिक लेख नेपाली भाषामा अनुवाद सहित प्रकाशित भएका पाइन्छ । यसै गरी विभिन्न भाषाका सम्पादित एउटा कविता संग्रह राष्ट्रिय भाषाका कविताहरू पनि प्रकाशित भएको थियो ।

74 गोपाल शिवाकोटी 'चिन्तन' (२०५९) 'भाषिक अधिकार सम्बन्धी मुद्दामा सर्वोच्च अदालतको निर्णय मानवअधिकार विपरित', मानवअधिकार सम्बन्धी सर्वोच्च अदालतको फैसलाहरूको टिप्पणी (१९५-१२७) ।

ल्याउने भनी गरेका निर्णयहरू संविधानको धारा ६(१) को प्रतिकूल भएकाले उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने ठहर्छ ।  
फैसला मिति २०५६/२/१८/३

यसरी शाहकालभरि अर्थात् २०६३ सम्म गैरखसभाषीहरूलाई मातृभाषाको प्रयोग विस्तारमा समेत वञ्चित गरेर भाषिक मानवअधिकारको हनन गरेको थियो । भाषिक विभेद जारी रह्यो । यस अवधिमा विभेदवाहेक संरक्षण, सम्बर्धन र विकासका कुनै कार्य राज्यले गरेको पाइँदैन । न मातृभाषाको प्रयोगबारे भाषिक नीति बन्यो नत शैक्षिक, साँस्कृतिक तथा संचार नीति नै तयार भए । २०४७ पछि भाषा, शिक्षा, संचार र संस्कृति बारेमा केही कार्य भएको देखिन्छ । ती सबै आ-आफ्ना क्षेत्रमा भएका टाक्राटुक्रे कार्य मात्र हुन् । राष्ट्रिय नीति नियम बिना नै सबै हचुवाको भरमा भएका कार्य हुन् ।

यस लेखमा मूलतः मातृभाषा, मातृभाषामा शिक्षा र संस्कृति गरी तीनओटा विषयक्षेत्र समावेश छन् । प्रत्येक विषयको परिचयपछि पृष्ठभूमि, अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठनको महासन्धि नं. १६९ (महासन्धि १६९) र आदिवासी जनजाति सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्रसंघीय घोषणापत्र, २००७ ले गरेको व्यवस्था, अद्यावधिक स्थितिको समीक्षा, विषयगत मुद्दा तथा चुनौतीहरू अनि अबको बाटो पहिल्याउनमा केन्द्रीत रहेको छ ।

### नेपालको सन्दर्भमा अन्तर्राष्ट्रिय संयन्त्रहरूको हैसियत र महासन्धिहरू

नेपालको कानूनी क्षेत्रमा अन्तर्राष्ट्रिय सन्धी सम्भौताहरूको उच्च स्थान छ । नेपालको प्रचलित ऐन कानून अन्तर्राष्ट्रिय ऐन कानूनसँग मेल नखाएमा नेपालको त्यस्ता प्रचलित ऐन कानून स्वतः अमान्य हुने प्रावधान नेपालको सन्धी ऐनमा छ । यस सम्बन्धमा नेपालले प्रतिबद्धता जाहेर पनि गरेको छ । उदाहरणको लागि नेपाल सन्धी ऐन २०४७ धारा ९(१) को सन्धी व्यवस्था कानून सरह लागू हुने शीर्षकमा लेखिएको छ:

‘संसदबाट अनुमोदन, सम्मिलन, स्वीकृति वा समर्थन भई नेपाल राज्य वा नेपाल सरकार पक्ष भएको कुनै सन्धिको कुरा प्रचलित कानूनसँग बाभिएमा सो सन्धिको प्रयोजनको लागि बाभिएको हदसम्म प्रचलित कानून अमान्य हुनेछ र

तत्सम्बन्धमा सन्धिको व्यवस्था नेपाल कानून सरह लागू हुनेछ।<sup>75</sup>

नेपाल अधिराज्यको संविधान, २०६३ को राज्यको दायित्व शीर्षक अन्तर्गतको धारा ३३(ड) मा 'राज्य पक्ष भएको अन्तर्राष्ट्रिय सन्धी सम्झौताको प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्ने' भनिएको छ। यसै कारणले तीन वर्षीय अन्तरिम योजना (२०६४/६५-२०६६/६७) ले त्यस्ता प्रावधानहरू प्रभावकारी ढंगले लागू गर्ने प्रतिवद्धता जाहेर गरेको छ- 'मानवअधिकारलगायतका नेपालले अनुमोदन गरेका संयुक्त राष्ट्रसंघ तथा अन्तर्राष्ट्रिय घोषणाका प्रावधानहरू प्रभावकारी रूपमा लागू गरिनेछ'।<sup>75</sup> यसरी नेपाल पक्षराष्ट्र भएका सन्धी महासन्धिहरू नेपाल कानून सरह लागू भइसकेको छ र नेपालले प्रभावकारी ढंगले लागू गर्ने प्रतिवद्धता पनि जाहेर गरी सकेको छ।

अन्तर्राष्ट्रिय संयन्त्रहरूमा भाषा

यहाँ मूलतः अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठनको महासन्धि नं. १६९ र आदिवासी अधिकार सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्रसंघीय घोषणापत्र २००७ लाई हेरिएको छ।

आइएलओ महासन्धि १६९ मा मातृभाषा: अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठनको महासन्धि नं. १६९ जुन १९८९ मा पारित भएको थियो। महासन्धिलाई जुन २००८ सम्ममा नेपाल लगायत विश्वका १९ राष्ट्रले अनुमोदन गरिसकेको छ।<sup>76</sup> यस महासन्धिको पूरा नाउँ अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठनको महासन्धि नं. १६९ आदिवासी तथा जनजाति सम्बन्धी

75 तीन वर्षीय अन्तरिम योजना (२०६४/६५-२०६६/६७), पृ. ३१।

76 अन्तर्राष्ट्रिय श्रम सङ्गठनको आदिवासी जनजातिसंग सम्बन्धित महासन्धी नं. १६९ लाई अनुमोदन गर्ने मुलुकहरूमा नर्वे (१९९०), मेक्सिको (१९९०), कोलम्बिया (१९९१), बोलिभिया (१९९१), कोस्टारिका (१९९३), पाराग्वे (१९९३), पेरु (१९९४), होन्डुरस (१९९५), डेनमार्क (१९९६), ग्वाटेमाला (१९९६), नेदरल्याण्ड (१९९८), फिजी (१९९८), इक्वेडर (१९९८), अर्जेन्टिना (२०००), ब्राजिल (२००२), डोमिनिका (२००२), नेपाल (२००७), स्पेन (२००७) र बोलिभियन रिपब्लिक अफ भेनेजुएला (२००७) रहेको छ।

महासन्धि १९८९ हो । यसको अंग्रेजी नाउँ International Labour Organization Convention No 169, Indigenous and Tribal Peoples Convention, 1989 हो ।

यस महासन्धि १६९ लाई २२ अगस्ट २००७ मा तदनुसार २०६४ साल भाद्र ५ गते नेपालको व्यवस्थापिका-संसदले अनुमोदन गरेको थियो । यसबारे नेपाल सरकारले १४ सेप्टेम्बर २००७ का दिन अन्तर्राष्ट्रिय श्रम सङ्गठनलाई औपचारिक रूपमा जानकारी दिएको थियो । जानकारी दिएको ठीक एक वर्षपछि यो महासन्धि लागु हुने प्रावधान<sup>77</sup> रहेकोले १४ सेप्टेम्बर २००८ (२०६५ भदौ २९) देखि यो महासन्धि नेपालमा लागू भएको छ । यसरी नेपाल यस महासन्धिको पक्षराष्ट्र बनेको छ र जिम्मेवारी थपिएका छन् ।

यस महासन्धिको धारा २८(२) र २८(३) मा भाषासम्बन्धि व्यवस्था छ । धारा २८(३) ले मातृभाषाहरूका विकास तथा अभ्यासलाई संरक्षण तथा सम्वर्धन गर्ने व्यवस्था गरेको छ भने धारा २८(२) ले मातृभाषी बालबालिकाको सरकारी भाषामा दक्षता बढाउने उपायहरूको अवलम्बन गर्ने व्यवस्था गरेको छ । जस्तै:

धारा २८.३ आदिवासी समुदायका मातृभाषाहरूको विकास र अभ्यासलाई संरक्षण र सम्वर्धन गर्ने उचित व्यवस्था मिलाइनेछ ।

धारा २८(२) सम्बन्धित समुदायहरूले राष्ट्रिय भाषा वा देशको कुनै एउटा सरकारी भाषामा दक्षता प्राप्त गर्ने अवसर प्राप्त गर्न सक्नु भनेर सुनिश्चित गर्नका लागि प्रयाप्त उपायहरू अवलम्बन गरिनेछ ।

यी धारा २८(२) ले मातृभाषाहरूको विकास र अभ्यासलाई संरक्षण र सम्वर्धन गर्न उचित व्यवस्था मिलाउने र धारा (२) ले सरकारी भाषामा दक्षता प्राप्त गराउनु पर्याप्त उपायहरू अवलम्बन गरिने व्यवस्था

77 अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठनको महासन्धि नं. १६९, धारा २८(३) 'यो महासन्धी अनुमोदनको लिखत दर्ता गराउने सदस्यको हकमा त्यसरी दर्ता गराएको मितिले बाह्र महिनापछि प्रारम्भ हुनेछ ।'

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● ११२

गरिएको छ। यी प्रावधानले मातृभाषाका साथै सरकारी भाषामा पनि पहुँच बढाउन जोड दिएको छ। मूलतः धारा २८(२) ले आदिवासी जनजातिका बालबालिकालाई 'दोस्रो भाषाको रूपमा नेपाली भाषा शिक्षण' का लागि प्रयाप्त उपायहरू अवलम्बन गर्ने भनिएको छ।

आदिवासी जनजातिको अधिकार सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्रसंघको घोषणापत्र: नेपाल सरकारले यस घोषणापत्रमा हस्ताक्षर गरेर नेपाल पक्षराष्ट्र बनेको छ। मानवअधिकार सम्बन्धी विश्वव्यापी घोषणापत्र जस्तै यसले पनि नेपाल सरकारलाई नैतिक दबाव दिएको छ। लक्ष्य निर्दिष्ट गरेको छ। यस घोषणापत्रमा भाषा सम्बन्धी छुट्टै प्रावधान छैन। भाषा पहिचानसँग विशेषगरी अमूर्त संस्कृतिसँग गाँसिएर आएको छ।

आदिवासी समुदायसँग आफ्नो मातृभाषालाई 'पुनर्जीवित गर्ने, प्रयोग गर्ने तथा भावी पुस्तालाई हस्तान्तरण गर्ने तथा समुदाय, स्थान र व्यक्तिहरूको आफ्नै नाम राख्ने र तिनलाई कायम राख्ने अधिकार छ'। यसै गरी धारा १३(२) ले आदिवासी जनजातिको अधिकार सुनिश्चित गर्नका लागि राज्यले मातृभाषामा अनुवाद गरेर वा अन्य प्रभावकारी उपाय अवलम्बन गर्नेछन् भनिएको छ। धारा १३ मा भनिएको छ:

धारा १३(१) आदिवासी जनजातिसँग उनीहरूको आफ्नो इतिहास, भाषा, मौखिक परम्परा, दर्शन, लेखन प्रणाली तथा साहित्यहरू पुनर्जीवित गर्ने, प्रयोग गर्ने तथा भावी पुस्तालाई हस्तान्तरण गर्ने तथा समुदाय, स्थान र व्यक्तिहरूको आफ्नै नाम राख्ने र तिनलाई कायम राख्ने अधिकार छ।

धारा १३ (२) यो अधिकार संरक्षित भएको कुरा सुनिश्चित गर्नुका साथै आवश्यक भएमा भाषानुवाद वा अन्य कुनै उपयुक्त माध्यमको व्यवस्था गरेर आदिवासी जनजातिले राजनीतिक, कानूनी तथा प्रशासनिक कारवाही बुझ्न सकून् र बुझेका होऊन् भन्ने कुरा सुनिश्चित गर्नका लागि राज्यहरूले प्रभावकारी उपाय अवलम्बन गर्नेछन्।

यूनएनडीपले आदिवासी जनजातिको अधिकारलाई जोड दिएको छ, भने महासन्धि १९९९ ले राज्यको प्रतिवद्धता देखिन्छ। पक्षराष्ट्रको

लागि यो महासन्धि १६९ बन्धनकारी कानून हो भने यूएनडीपका धाराहरू अनुकुलका कार्ययोजना तयार गर्न र कार्यक्रम लागू गर्न राज्यलाई नैतिक दबाव सिर्जना गर्दछ। तसर्थ यी दुवै संयन्त्रहरू आदिवासी जनजातिको अधिकार र विकासको लागि राज्य, सरकार र अन्य सरोकारवाला पक्षसँग छलफल वा वार्ता गर्ने महत्वपूर्ण औजार हुन्। हाललाई यसैमा टेकेर आदिवासी जनजातिले आफ्नो भविष्य निर्धारण गर्न सक्नुपर्दछ।

## नेपालको भाषा नीति

### नेपालका भाषा

भाषा समुदायको मात्र होइन, राष्ट्रिय कै सम्पत्ति हो। यसलाई भावी पुस्तामा हस्तान्तरण गर्नुपर्दछ। किनकि पूर्खाको सम्पत्तिमा उनीहरूको पनि हक हुन्छ। भाषाशास्त्रीहरू कुनै भाषा वा भाषिका लोप हुनु भाषावैज्ञानिकहरूको लागि मानव संस्कृतिको अपूर्णीय क्षती हुनु हो भन्दछन्। आदिवासी जनजातिहरूको लागि मातृभाषा विचार अभिव्यक्तिको माध्यम मात्र होइन, पहिचानको प्रमुख आधार पनि हो, स्थानीय ज्ञान-विज्ञानको भण्डार पनि हो, संस्कृतिका वाहक पनि हो।<sup>78</sup> अफ्रिकाका किप्लाडात चेरुइयोत (२००६)ले भनेका पनि रहेछन्-

‘हालसम्मको अवलोकनबाट के प्रष्ट भएको छ भने भाषा हराउनु भनेको संस्कृति हराउनु हो र संस्कृति हराउनु भनेको अमूल्य ज्ञान पनि लोप हुनु हो।’

यसै गरी मातृभाषाको महत्वमाथि प्रकाश पादैं अमेरिकी आदिवासी डारिल बेव विल्सनले मातृभाषा सधैं सधैं बाँच्नका लागि हो भनेका छन्- ‘यस संसारमा बाँच्नका लागि हामीले अवश्य नै सेतो (मान्छेको) भाषा जान्नु पर्दछ तर सधैं सधैं बाँच्नका लागि हामीले हाम्रै भाषा जान्नु पर्दछ।’<sup>79</sup> सन्तवीर लामाले ‘भाषा त देशको गहना, भाषा त पूर्खाको

78 अमृत योन्जन-तामाङ (२००९) नेपालमा भाषाहरूको पहिचान वर्तमान स्थिति र भाषिक विकास योजना।

79 Kiplangat Cheruiyot writes "It has been observed that 'a lost language is a lost culture, a lost culture is invaluable knowledge lost.'" and Darryl Babe Wilson says "We must know the white [man's] language to survive in this world. But we must know our language to survive forever".

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● ११४

आर्शिवाद<sup>80</sup> भनेर भाषाको महत्व दर्शाएका छन्। यसरी मातृभाषाको निकै ठूलो महत्व छ।

नेपालमा १२३ भन्दा धेरै भाषा बोलिन्छन्।<sup>81</sup> सन् २०११ को जनगणनाले नेपालमा १२२ भन्दा धेरै भाषा भाषाको सूची प्रकाशित गरेको छ। यी भाषाहरू मूलतः पाँच परिवारका छन्- (१) भोट-वर्मेली (२) भारोपेली (३) ड्राभिडियन (४) अस्ट्रो-एसियाटिक र (५) अवर्गीकृत। कुसुण्डा भाषा कुन परिवारको भाषा हो अझसम्म प्रष्ट हुन सकेको छैन।

भाषाको वक्ता संख्याको आधारमा नेपालका भाषाहरूलाई ५ ओटा श्रेणीमा राख्न सकिन्छ- (१) दश लाखभन्दा बढी वक्ता भएको भाषा (५)

(२) एक लाखदेखि १० लाखसम्म वक्ता भएको भाषा (१३)

(३) दश हजारदेखि १ लाखसम्म वक्ता भएको भाषा (२६)

(४) एक हजारदेखि १० हजारसम्म वक्ता भएको भाषा (३३)

(५) एक हजारभन्दा कम वक्ता भएको भाषा (२०)।

तालिका-१ बाट वर्गीकरणसहित भाषाको नाउँ पनि दिइएको छ।

| तालिका १: वक्ताको संख्याको आधारमा नेपालका भाषाहरूको स्थिति |                                    |   |        |
|--|------------------------------------|---|--------|
| क्र.सं.  | भाषाको आकार र स्थिति               | नेपालका भाषाहरू   | संख्या |
| १.   | १० लाखदेखि माथिकाले बोल्ने भाषाहरू | नेपाली भाषा (११,८२६,९५३), मैथिली (३,०९२,५३०) <sup>1</sup> , भोजपुरी (१,५८४,९५८), थारू (१,५२९,८७५) र तामाङ (१,३५३,३११) गरी मात्र चार भाषा पर्दछ। | ५      |

80 सन्तवीर लामा (१९५७) ताम्बा काइतेन हवाई रिमिठम, पृ. २५।

81 तर विभिन्न अध्ययनहरूले नेपालमा १४३ भन्दा धेरै भाषा रहेको अनुमान गरेका छन्। केवरत आदि भाषाहरू जनगणनाको प्रतिवेदनले समावेश गर्न सकिराखेको छैन।

|    |  |  |    |
|----|--|--|----|
| २. | १ लाखदेखि १० लाख सम्मकाले बोल्ने भाषाहरु   | नेपाल भाषा (८४६,५५७), वज्जिका (७९३,४१६), मगर (७८८,५३०), डोटेली (७८७,८२७), उर्दु (६९१,५४६) अवधी (५०१,७५२), लिम्बु (३४३,६०३), गुरुङ (३२५,६२२), बैटडेली (२७२,५२४), अछामी (१४२,७८७), वान्तावा (१३२,५८३), राजवंशी (१२२,२१४) र शेर्पा (११४,८३०) भाषा ।   | १३ |
| ३. | १० हजारदेखि १ लाख सम्मकाले बोल्ने भाषाहरु  | चाम्लिङ (७६,८००), बम्हाङ्गी (६७,५८१), सन्थाल (४९,८५८), दनुवार (४५,८२१), चेपाङ (४८,४७६), सुनुवार (३७,८९८), मगही (३५,६१४), उराँव (३३,६५१), कुलुङ (३३,१७०), खाम/पाङ (२७,११३), माभी (२४,४२२), थामी (२३,१५१), भुजेल (२१,७१५), थुलुङ (२०,६५९), याक्खा (१९,५५८), धिमाल (१९,३००), ताजपुरिया (१८,८११), अङ्गिका (१८,५५५), साम्पाङ (१८,२७०), खालिङ (१४,४६७), वाम्बुले (१३,४७०), कुमाल (१२,२२२), दराई (११,६७७), वाहिङ (११,६५८), बाजुरेली (१०,७०४) र नाछिरिङ (१०,०४१) गरी २६ भाषा पर्दछन् ।   | २६ |
| ४. | १ हजारदेखि १० हजार सम्मकाले बोल्ने भाषाहरु | याम्फु (९,२०८), बोटे (८,७६६), घले (८,०९२), दुमी (७,६३८), लाप्चा (७,४९९), पुमा (६,६८६), दुङ्माली (६,२६०), दार्चुलेली (५,९२८), आठपहरिया (५,५३०), थकाली (५,२४२), जिरेल (४,८२९), मेवाहाङ (४,६५०), मेचे (४,३७५), छन्त्याल (४,२८३), राजी (३,७५८), लोहोरुङ (३,७१६), छिन्ताङ (३,७१२), गन्नाई (३,६१२), पहरी (३,४५८), दैलेखी (३,१०२), ल्होपा (३,०२९), दुरा (२,१५६), कोचे (२,०८०), छिलिङ (२,०४६), जेरो (१,७६३), खस (१,७४७), डोल्याली (१,६६७), हायु (१,५२०), तिलुङ (१,४२४), कोयी (१,२७१), किसान (१,१७८), योल्मो (१,१७६), वालुङ (१,१६९) गरी ३३ भाषा छन् । | ३३ |



|   |  |  |                 |
|---|--|--|-----------------|
| ५.  | १ हजारभन्दा कम जनसंख्याले बोल्ने भाषाहरू | जुम्ली (८५१), ल्होमी (८०८), बेल्हारे (५९९), सोनाहा (५७९), डडेलधुरी (४८८), ब्यासी (४८०), खाम्ची राउटे (४६१), साम (४०१), मनाङ्गे (३९२), धुलेली (३४७), फाङ्गदुवाली (२९०), सुरेल (२८७), मालपाङ्गे (२४७), खडिया (२३८), बराम (१५५), लिङ्खिम (१२९), कागते (९९), वनकरिया (६९), काङ्के (५०), कुसुण्हा (२८) भाषा । | २०              |
|   | अन्य भाषा वा गैरैथाने भाषाहरू            | अंग्रेजी, आंगिका, आसामिज, उडिया, कुकी, कुरमाली, चाइनिज, जोङ्खा, तिब्बती, नागामेसे, पंजाबी, मिजो, बंगला, मारवाडी, मगही, सिन्धी, सधनी, संस्कृत, हरियान्दी, हिन्दी ।  | २०              |
|   | जनगणनाको तथ्यांकमा देखा नपरेका भाषाहरू । | कुसुवाडिया, वालुङ, तोफ्केगोला, लार्के, मुगाली, ताङ्गे, बाह्रगाउले, छैरोतन, खाम-मगर, सियार, थुदाम, मुगाली-राई, लुम्बा याक्खा, छुक्वा/चाक्वा, पोल्माचा, लाम्बिछोङ, छुलुङ, मनाङ्बा, नारफू, टिचुरोङ, माउ, साद्री, सुर्जापुरी, नुव्री, चुम्बा/चुम, राना-थारू, केवरत आदि ।                                     | २७ भन्दा धेरै । |
| तालिका विकास: अमृत योजन-तामाङ, अगस्ट, २०१३) |  |  |                 |

## अद्यावधिक स्थितिको समीक्षा<sup>82</sup>

महासन्धि १६९ र यूएनड्रीप लागू भएपछि २०७२ असोजमा नेपालको संविधान २०७२ लागू भएको हो । यस संविधानको धारा ३ ले नेपाललाई 'बहुजातीय, बहुभाषिक, बहुधार्मिक, बहुसांस्कृतिक विशेषतायुक्त ... राष्ट्र' को रूपमा स्वीकारेको छ । यहाँ नेपालको भाषिक यथार्थ प्रतिबिम्बित भएको छ । यस प्रकारको व्यवस्थाको प्रारम्भ नेपाल अधिराज्यको संविधान २०४७ बाट भएको थियो । उक्त संविधानको

82 यस अध्ययनमा द्वन्द्वकालपश्चात् अर्थात् २०६३ देखि आजसम्मको अवधिको लागि अद्यावधिक शब्दावलीको प्रयोग गरिएको छ ।

धारा ४(१) मा 'नेपाल एक बहुजातीय, बहुभाषिक .... अधिराज्य हो' भनेर पहिलो पटक नेपालको बहुभाषिक विशेषतालाई स्वीकारेको थियो भने नेपाल अन्तरिम संविधान २०६३ ले धारा ३ यसको व्यवस्था गरेको छ । यसभन्दा अगाडिका कालखण्डहरूमा नेपाली राज्यसत्ताले नेपाललाई एक भाषिक मुलुकको पक्तिमा उभ्याएको थियो ।

नेपालको संवैधानिक इतिहासमा पहिलो पल्ट नेपालको अन्तरिम संविधान २०६३ ले भाषिक समानताको हक प्रदान गरेको छ । यो समानताको हक धारा १३(२) र १३(३)<sup>८३</sup> मा व्यवस्था गरिएको छ । हालको संविधानको धारा १८ (२) र (३)ले पनि यस भाषिक समानताको हकलाई निरन्तरता दिएको छ ।

यसभन्दा अगाडिको संविधानहरू (२००४, २००७, २०१५, २०१९ र २०४७) मा मातृभाषी समुदायलाई भाषिक समानताको हकबाट विमुख गराइएका थिए (हे. तालिका-२) । यसैगरी वर्तमान संविधानको धारा ६ ले 'नेपालमा बोलिने सबै मातृभाषाहरू राष्ट्रभाषा हुन्' भनेर समान तह (Equal Status)को व्यवस्था गरिएको छ । नेपाल अधिराज्यको संविधान २०४७ ले नेपाली भाषालाई राष्ट्र भाषा र अन्य भाषालाई राष्ट्रिय भाषा भनेर विभेद गरिएको थियो । यसका साथै अन्तरिम संविधानको धारा ५(१) को दोस्रो अनुच्छेदले 'स्थानीय निकाय तथा कार्यालयमा मातृभाषा प्रयोग गर्न कुनै बाधा पुऱ्याएको मानिने छैन' अर्थात् मातृभाषामा सरकारी कामकाज गर्न सकिने संवैधानिक व्यवस्था गरेको थियो भने अहिलेको संविधानले यो व्यवस्था राखिएको छैन ।

संविधान देशको मूल कानून हो र महासन्धि १६९ र यूएनडीप अन्तर्राष्ट्रिय कानून हुन् । यी कानूनहरूको अनुकुल हुने गरी ऐन, कानून, नीति तथा

---

८३ धारा १३(२) - सामान्य कानूनको प्रयोगमा कुनै पनि नागरिकमाथि धर्म, वर्ण, लिङ्ग, जात, जाति वा वैचारिक आस्था वा तीमध्ये कुनै कुराको आधारमा भेदभाव गर्ने छैन । यसै गरी धारा १३(३) - राज्यले नागरिकहरू बीच धर्म, वर्ण, जात, जाति, लिङ्ग, उत्पत्ति, भाषा वा वैचारिक आस्था वा तीमध्ये कुनै कुराको आधारमा भेदभाव गर्ने छैन । नेपालको अन्तरिम संविधान २०६३

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● ११८

रणनीति परिमार्जन गर्नुपर्दछ । तर परिमार्जन हुन सकेको छैन । यी कानूनी प्रावधानहरूलाई सम्बोधन गर्न कुनै ठोस कार्यक्रम बनाएर कार्यान्वयन पनि गर्न सकेको देखिँदैन । हुनत संविधानवाहेक भाषा सम्बन्धी ऐन कानून नै देखिँदैन ।

भाषाबारे केही कानूनी प्रावधान नभएको होइन । महासन्धि १९९ लागू हुनुभन्दा एकदशक अगाडि नै नेपाल सरकारले स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन, २०५५ र निमयावली २०५६ मा भाषा विकासका लागि केही व्यवस्था गरेको देखिन्छ । तर यसअनुसार कहीं कतै भाषिक कार्य सम्पन्न भएको पाइँदैन । यस ऐनमा भाषा सम्बन्धी निम्न व्यवस्था गरिएको छः

दफा २८भ(२) गाविस क्षेत्रभित्रका विभिन्न भाषा, धर्म र संस्कृतिको संरक्षण गर्ने, गराउने र तिनीहरूको विकासमा सहयोग गर्ने ।

दफा १६ड(२) नगरपालिका क्षेत्रभित्रका पुरातात्विक वस्तु, भाषा, धर्म, कला र संस्कृतिको संरक्षण, सम्बर्धन एवं प्रयोग गर्ने गराउने ।

दफा १८९ठ(३) जिल्ला विकास क्षेत्रभित्रका पुरातात्विक वस्तु, भाषा, धर्म, कला र संस्कृतिको संरक्षण, सम्बर्धन एवं प्रयोग गर्ने गराउने ।

यस ऐनको उद्देश्य अनुरूप स्थानीय तहलाई बलियो बनाउँदै जाने लक्ष्यले सरकारले वि. सं. २०५२/५३ देखि गाउँ विकास समितिलाई ५ लाखका दरले अनुदान दिन सुरु गर्‍यो । आव २०६३/६४ देखि गाविसलाई दिने अनुदान १० लाख पुऱ्याइएको र आव २०६५/६६ मा यो अनुदान बढाएर १० लाखदेखि ३० लाखसम्म पुऱ्याइएको छ । यसरी डेढ दशकमा कुनै पनि गाविसले भाषाको संरक्षण र सम्बर्धनका लागि खर्च गरेको जानकारी बाहिर आएको छैन ।

यसअनुरूप जिल्ला विकास समिति अनुदान संचालन कार्यविधि, २०६६ र गाउँ विकास समिति अनुदान संचालन कार्यविधि, २०६६ लागू

गरिएको छ । यस कार्यविधिले जिल्ला तहमा आदिवासी जनजातिको भाषा, शिक्षा, संस्कृति सम्बन्धी कार्यक्रम सम्पन्न गर्न १५ प्रतिशत अनुदान र गाविसमा त्यस्तो कार्यक्रम सम्पन्न गर्न १० प्रतिशत र बालबालिकाका लागि ५ प्रतिशत अनुदान रकमको व्यवस्था गरेको छ । यी कार्यविधिअनुसार मातृभाषा सम्बन्धी के कति कार्य सम्पन्न भए आधिकारिक सूचना बाहिर आएको पाइँदैन ।

यसै गरी नेपाल सरकारले सन् २००१ देखि सबैको लागि शिक्षा कार्ययोजना लागू गर्‍यो । सबैका लागि शिक्षा राष्ट्रिय कार्ययोजना नेपाल (२००१-२०१५) मा 'खतरामा परेका भाषा र संस्कृतिका निम्ति विशेष कार्यक्रम तय गरिने' प्रतिवद्धता जाहेर गरेको हो । तर शिक्षा मन्त्रालय, शिक्षा विभागले यी प्रतिवद्धता पूरा गर्न कुनै पनि कार्यक्रम लागू गरेन ।

यसैगरी राष्ट्रिय योजना आयोगले तीन वर्षीय अन्तरिम योजना (२०६४/६५-२०६६/६७) मा 'राष्ट्रिय सांस्कृतिक नीतिको विकास गरी राष्ट्रकै धरोहरका रूपमा रहेका आदिवासी/जनजातिहरूको भाषा, धर्म र संस्कृतिको संरक्षण र सम्वर्द्धन गरिनेछ।'<sup>84</sup> भने पनि तीन वर्षको अवधिमा राष्ट्रिय सांस्कृतिक नीतिको सुरसारसम्म पनि गरिएन । योजनाको प्रमुख कार्यक्रमहरूमा लोपोन्मुख भाषाहरूको संरक्षण र सम्वर्द्धनका निम्ति सन्दर्भ सामग्री तयार गर्ने, मातृभाषामा आरोप बुझ्न पाउने वा वयान दिन पाउने ऐन निर्माण गर्ने, लोपोन्मुख मातृभाषाहरूको आधारभूत व्याकरण तथा शब्दकोश निर्माण गर्ने आदि<sup>85</sup> भनिएता पनि तीमध्ये कुनै

84 राष्ट्रिय योजना आयोगले तीन वर्षीय अन्तरिम योजना (२०६४/६५-२०६६/६७), आदिवासी/जनजाति, रणनीतिहरू, पृ. ११७ ।

85 मातृभाषाको सम्बन्धमा तीन वर्षीय अन्तरिम योजना (२०६४:११८:१२१) मा भएको व्यवस्था निम्नानुसार रहेको छ - (क) लेख्य परम्परा भएका आदिवासी जनजाति भाषाहरूमा क्षेत्रीय एवं स्थानीय स्तरको सरकारी कायमकाज तथा अदालत वा अन्य न्यायिक निकायमा आदिवासी जनजातिहरूलाई आफ्नो भाषामा आरोप बुझ्न पाउने वा वयान दिन पाउने ऐन निर्माण निर्माण गर्ने, (ख) लोपोन्मुख आदिवासी जनजातिका भाषा, संस्कृतिहरूको संरक्षण, सम्वर्द्धन र सचेतनाका निम्ति अध्ययन अनुसन्धान कार्यक्रम सञ्चालन गर्ने, (ग) आदिवासी जनजातिका भाषा संस्कृति तथा सम्पदाहरूको संरक्षण र सम्वर्द्धनका निम्ति

कार्य यस अवधिमा भए गरेको देखिदैन ।

मातृभाषाको पनि संरक्षण र सम्बर्धन गर्न आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठानको स्थापना भएको हो ।<sup>86</sup> यस प्रतिष्ठानले लेख्य परम्परा नभएका भाषाहरूको वर्णपहिचान

सन्दर्भसामग्री तयार गर्ने र (घ) मृतःप्राय भाषाहरू (कुसुन्डा, पुमा, लाप्चा, कोयु, राजी, खडिया, हायु, मेवाहाड, काइके, राउटे, किसान, चुरौटी, बरामु, तिलुड, जेरुड, दुडमाली, लिङ्खिम, मुण्डा, कोचे, साम, कागते, छिन्ताड, ल्होमी, कूसवाडिया, वनकरिया, सुरेल, सियार, थुदाम, मुगाली, लुम्बा, याक्खा, छुवा, पोल्माचा, वालिड, लम्बिछोड, फाडदुवाली, छुलुड, मनाडवा, नार्फु आदि) तथा लोपोन्मुख भाषाहरू (दुरा, माभी, कुमाल, दुमी, बोम्बुले, हचोल्मो, नाछिरिड, मेचे, पहरी, बोटे, व्यासी, याम्फुले, घले, छिलिड, लोहोरुड, लार्के, ल्होपा, खाममगर, वेल्हारे आदि) को अभिलेखिकरण (आधारभूत व्याकरण तथा शब्दकोश निर्माण, श्रव्य-दृश्य सामग्री तयार आदि) गर्ने आदि आदि ।

- 86 आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान ऐन, २०५७ ले निम्न मुख्य उद्देश्य र कार्यको व्यवस्था गरेको छ - दफा ५(ख) आदिवासी/जनजातिको भाषा, लिपि, संस्कृति, साहित्य, कला, इतिहासको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्ने, दफा ६ (क) आदिवासी/जनजातिको भाषा, लिपि, साहित्य, इतिहास, कला, संस्कृति, परम्परागत सीप तथा प्रविधिको प्रवर्द्धन तथा संरक्षणका लागि आवश्यक कार्यक्रम तर्जुमा गर्ने र सोको कार्यान्वयन गर्ने वा गराउने, (ख) आदिवासी/जनजातिको भाषा लिपि, साहित्य, इतिहास, कला, परम्परा र संस्कृतिको अध्ययन तथा अनुसन्धान गर्ने र त्यस्तो भाषा, लिपि, इतिहास, कला, साहित्य, संस्कृति र परम्परालाई विकास गर्ने, (ङ) भाषा साहित्यसंग सम्बद्ध अन्य निकायहरूको सहयोग लिई आदिवासी/जनजातिको भाषाको शब्दकोष तयार गर्ने र प्रकाशन गर्ने वा गराउने, (च) आदिवासी/जनजातिको भाषा, संस्कृति, इतिहास, परम्परालाई परिचय गराउने अभिलेखालय तथा संग्रहालय स्थापना गर्ने, (ज) आदिवासी/जनजातिको भाषा, संस्कृति, इतिहास, साहित्य, कला, परम्परागत प्रविधिको अध्ययन वा अनुसन्धान गर्न चाहने विदेशी विद्वानलाई नेपाल सरकारको स्वीकृति लिई प्रतिष्ठानसंग सम्बद्ध भई अध्ययन वा अनुसन्धान गर्न दिने, (ड) आदिवासी/जनजातिको मातृभाषामा सूचना, समाचार एवं विविध कार्यक्रम प्रसारण गर्ने व्यवस्था मिलाउने आदि ।

गर्न र लेख्यआधार तयार गर्न र आधारभूत शब्दकोश तथा व्याकरण निर्माणका लागि सम्बन्धित मातृभाषी संघसंस्थालाई सहयोग गर्ने गरेको छ र केही कार्य भएको पनि छ तर यस अवधिमा कुन कुन भाषामा के कस्ता कार्य सम्पन्न भए यसको प्रगति प्रतिवेदन वा सूची पाउन सकिएको छैन ।

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको गठन २०६६ मा भएको हो । यस प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको मुख्य उद्देश्य साहित्य, संस्कृति, दर्शन, समाजशास्त्रीय विषयका साथै भाषाको संरक्षण र सम्बर्धन गर्नु पनि रहेको छ । नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ऐन २०६४ को धारा ५(त) ले 'नेपालका विभिन्न जातजातिका लोपोन्मुख भाषा र संस्कृतिको संरक्षण तथा सम्बर्धन गर्न प्राथमिकता दिने' भनिएको छ । नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानबाट पनि भाषिक विकास र संरक्षणको लागि केही कार्यक्रम तय गरिएको छ । केही भाषिक गोष्ठीबाहेक अन्य अध्ययन-अनुसन्धानको कार्य हुन सकेको छैन ।

### मुद्दा तथा चुनौतीहरू

नेपालको संविधान २०७२ र महासन्धि नं. १६९ ले समानताको आधारमा मातृभाषाहरूको विकास तथा अभ्यासलाई संरक्षण तथा प्रवर्द्धन गर्ने व्यवस्था गरेता पनि र यस अनुरूप राष्ट्रिय योजना आयोगले तीन वर्षीय अन्तरिम योजनाहरू लागू गरे पनि हालसम्म कुनै उल्लेखनीय कार्य हुन सकेको छैन । सरकारलाई समयमै सचेत गराउँदा गराउँदै पनि दुरा भाषा लोप भएको छ । भाषिक कार्यक्रम लागू गर्ने अधिकारिक संस्था नै प्रष्ट देखिँदैन । राष्ट्रिय योजना आयोगले तीन वर्षीय अन्तरिम योजनामा व्यक्त प्रतिवद्धता अनुसार भाषिक संरक्षण र सम्बर्धन कार्यक्रम कार्यान्वयन भएको पाइँदैन । यसको मतलब नीति, रणनीति छ, कार्यक्रम पनि छ तर कार्यान्वयन हुन सकेको छैन । कार्यान्वयन पक्ष कमजोर देखिनुमा जिम्मेवार पक्ष प्रष्ट नदेखिनु पनि हो । विभिन्न तहमा भएको परामर्श तथा अध्ययनहरूले भाषाका धेरै मुद्दा तथा चुनौतीहरू देखाएका छन् ।

सामाजिक न्यायका निमित्त मातृभाषीहरूले आवाज उठाउँदै आएका

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १२२

छन् । भाषाको आधारमा हुने विभेदलाई अन्त गर्न चाहन्छन् । यसर्थ अहिले उनीहरूले उठाउने गरेको मूल भाषिक मुद्दा हुन्- (क) भाषिक समानताको अधिकार, (ख) समान स्तर निर्धारण र व्यवहार, (ग) मातृभाषाको माध्यमबाट शिक्षामा पहुँच, (घ) प्रशासन, संचार माध्यम, लोकसेवाको परीक्षा आदि क्षेत्रमा मातृभाषाको प्रयोग विस्तार र (ङ) भाषिक मानवअधिकारको ग्यारेन्टी ।

नेपालको राष्ट्रिय भाषा नीति तयारीका साथै कार्यान्वयनको लागि राष्ट्रिय भाषा आयोग गठन नभएसम्म मातृभाषाहरूको संरक्षण र सम्वर्धन हुनसक्ने देखिदैन । हाल आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान वा नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान वा अन्य सरकारी निकायहरू विशेष गरी जिल्ला विकास समिति, शिक्षा विभाग, पाठ्यक्रम विकास केन्द्र आदिबाट टाक्राटुक्रो काम हुने गरेको छ । पहुँच हुनेहरू जहीतही र पहुँच नहुनेहरू कहिनकही भएको छ । आयोग गठन गर्न आजउराप्र वा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान वा दुवैले यस कार्यको लागि पहल गरिनु आवश्यक छ। राष्ट्रिय भाषा आयोग गठन भएपछि भाषा सम्वन्धी धेरै समस्या र मुद्दाहरू हल भएर जानेछन् भन्ने धारणा पनि सहभागीहरूले व्यक्त गरेका थिए ।

### अबको बाटो

समाजिक न्याय, दीगो शान्तिका लागि भाषिक मुद्दा तथा चुनौतिहरूलाई सम्वोधन गर्न आवश्यक छ । नेपालका भाषाहरूको संरक्षण तथा सम्वर्धनका लागि विभिन्न परामर्श र गोष्ठीबाट प्राप्त सुझावलाई निम्नानुसार प्रस्तुत गरिएको छ ।

- (१) नेपालको भाषा सम्वन्धी राष्ट्रिय नीति (National Language Policy) तर्जुमा गर्नुपर्दछ ।
- (२) भाषा सम्वन्धी विभिन्न समस्या तथा मुद्दाहरू हल गर्न, भाषाको सम्वर्धन र प्रयोग विस्तार गर्न विभिन्न सरकारी तथा भाषिक निकायहरूलाई समन्वय गर्न यथा शाक्य छिटो भाषा आयोगलाई पूर्णता दिनुपर्दछ ।

- (३) गत दुई दशकदेखि मातृभाषाहरूको संरक्षण, सम्बर्धन र विकासको लागि पनि जिविस र नगरपालिका/ गाविसमा अनुदान बजेट पुगेको छ। तर अहिलेसम्म कुनै काम भएको छैन। भाषा विकासको सन्दर्भमा यसबारे ध्यान पुऱ्याएर यसबारे चेतनामूलक कार्यक्रम गर्न आवश्यक छ।
- (४) सरकारका प्रमुख अंगहरूले आ-आफ्ना अभिलेख तथा गतिविधिहरूलाई मातृभाषाहरूमा अनुवाद गरी आदिवासी जनजाति समुदायलाई सूसूचित गरिनुपर्दछ।
- (५) संयुक्त राष्ट्रसंघीय निकायहरू र राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संघसंस्थाका सूचनाहरू पनि नेपालका धेरै भन्दा धेरै मातृभाषामा प्रकाशन तथा प्रशारण गरेर महासन्धिलाई स्थानीय तहसम्म कार्यान्वयन गर्ने सन्दर्भमा सघाउनुपर्दछ।
- (६) समुदायका युवापुस्तालाई मातृभाषा संरक्षण गर्न प्रोत्साहित गर्दै मातृभाषा बोलचाल पाठ्यसामग्री र कार्यक्रम संचालन गरिनु पर्दछ।
- (७) प्रमुख भाषाको प्रयोग विस्तारमा सघाउदै लोपोन्मुख तथा मृतप्रायः मातृभाषाहरूलाई प्राथमिकताको आधारमा संरक्षण र सम्बर्द्ध गर्न विशेष कार्यक्रम संचालन गरिनु पर्दछ।

## मातृभाषामा शिक्षा र नीति

‘आदिवासी जनजातिहरूको शैक्षिक स्तर वर्तमान शिक्षासम्बन्धी नीति तथा कार्यक्रमहरूले प्रभावकारी रूपमा उठाउन नसकेको तथ्यांकहरूले देखाउँछ। आदिवासी जनजातिको शैक्षिक स्तर उठाउनका लागि मातृभाषामा शिक्षाको अनिवार्यतालाई नीति तथा कानूनहरूले मान्यता दिए तापनि प्रभावकारी कार्यक्रम तथा शिक्षासम्बन्धी राष्ट्रिय नीतिको अभाव तथा मौजुदा नीति तथा कार्यक्रमहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयन नहुँदा आदिवासी जनजातिको शैक्षिक स्तर बढ्न सकेको छैन। तसर्थ आदिवासी जनजातिको शैक्षिक अवस्था सुधार्न मातृभाषामा शिक्षा



नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू • १२४

प्रदान गर्ने, शैक्षिक संस्था संचालन गर्न आदिवासीहरूलाई स्रोतसाधन उपलब्ध गराउने गरी महासन्धिले निर्दिष्ट गरेबमोजिम कानून तथा नीति कार्यक्रम तर्जुमा तथा कार्यान्वयन गरिए आदिवासी जनजातिको शैक्षिक अवस्था सुधार आउनेछ' भनी स्थानीय विकास मन्त्रालयले महासन्धि १६९ कार्यान्वयनको लागि तयार गरिएको राष्ट्रिय कार्ययोजना २०६६ (National Action Plan -2066) मा भनिएको छ । यस कार्ययोजनाले शिक्षामा आदिवासी जनजातिको खासै पहुँच नभएको तथ्यलाई स्वीकारेको छ ।

नेपाल सरकार, शिक्षा विभागबाट प्रकाशित लिफ्लेट School Level Educational Statics of Nepal at a Glance 2066 (2009-2010) अनुसार नेपालमा ३१,६५५ प्राथमिक विद्यालय, ११,३४१ निम्न माध्यमिक विद्यालय, ६,९२८ माध्यमिक विद्यालय र २,५१२ उच्च माध्यमिक विद्यालय छन् । यी विद्यालयहरूमा जम्मा ७,५७५,८८० विद्यार्थी अध्ययनरत् छन् । विभिन्न सरकारी विद्यालयमा अध्ययनरत् सिमान्तकृत आदिवासी जनजाति विद्यार्थीका लागि नेपाल सरकारले छात्रावृत्तिको व्यवस्था गरेको छ ।<sup>87</sup> उच्च माध्यमिक विद्यालय शिक्षा परिषद्ले पनि आदिवासी जनजाति विद्यार्थीका लागि छात्रावृत्तिको व्यवस्था गरेको छ ।

आर्थिक सर्वेक्षण, आर्थिक वर्ष २०६६/६७<sup>88</sup>अनुसार नेपालमा हाल ६ ओट विश्वविद्यालय रहेको छ- त्रिभूवन विश्वविद्यालय, काठमाडौं विश्वविद्यालय, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय, पोखरा विश्वविद्यालय र लुम्बिनी विश्वविद्यालय । लुम्बिनी बौद्ध विश्वविद्यालय संचालन उन्मुख रहेकोमा हाल क्रियाशिल रहेको छ । यी विश्वविद्यालयहरूमा आदिवासी जनजाति विद्यार्थीहरूका लागि कुनै विशेष व्यवस्था छैन । यी विश्वविद्यालयका केही प्राविधिक क्याम्पसहरूमा भर्ना कोटाको व्यवस्था गरेको छ । यसै गरी त्रिभूवन विश्वविद्यालयले नेवारी र मैथिली भाषा विषयको स्नातकोत्तर तहमा अध्यापन गरिराखेको छ । नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालयले पनि आइए

87 नेपाल सरकार, आर्थिक सर्वेक्षण २०६६/२०६७ पृ. १८२ ।

88 आर्थिक सर्वेक्षण, आर्थिक वर्ष २०६६/६७, पृ. १९७ ।

तहको पाठ्यक्रममा नेवारी, थारु र लिम्बु भाषा राखेको छ र अन्य मातृभाषालाई समावेश गर्ने नीति तयार हुदैछ ।

यस अध्ययनमा महासन्धि १६९ को प्रावधानको आधारमा शैक्षिक संस्थाहरूमा मातृभाषामा शिक्षा र शिक्षमा मातृभाषीहरूको पहुँचको बारेमा केही अध्ययन-विश्लेषण गरिनेछ ।

### ऐतिहासिक पक्ष

राणाकालमा शिक्षा दरवारियाहरूका लागि मात्र थियो । प्रधानमन्त्री जंगबहादुरको बेलायत भ्रमणपछि यो शिक्षा प्रारम्भ भएको हो । अन्य केही थियो भने बाहुन-पण्डितहरूलाई थियो संस्कृत शिक्षाको व्यवस्था । संस्कृत शिक्षामा हिन्दू धर्मको कर्मकाण्डको अध्ययन हुन्थ्यो ।<sup>89</sup> त्यति बेला सर्वसाधारण भनेको दरवारमा पहुँचभन्दा बाहिरका कर्मकाण्डका बाहुन विद्यार्थी हुन्थे । संस्कृतमा उच्च शिक्षा पढनका लागि पनि राणा सरकारले छात्रावृत्तिको व्यवस्था गरेको थियो ।<sup>90</sup> दरवारीया र बाहुन विद्यार्थीलाई बाहेक अन्यको लागि शिक्षा कल्पनाभन्दा बाहिरको कुरा थियो । अनुमति थिएन । राणकालमा मातृभाषाको प्रयोगमा बन्देज लगाएको प्रसंग भाषाको अध्यायमा चर्चा भइसकेको छ ।

89 'रणोद्दीप सिंहवाट रानीपोखरीको उत्तरतिर टहरामा सात-आठ अध्यापक नियुक्ति गरी १९३४ सालतिर व्यवस्थित रूपमा पाठशाला खडा गरी सर्वसाधारण शिक्षार्थीहरूलाई व्याकरण, काव्य, ज्योतिष आदि इच्छानुसार संस्कृत शिक्षा दिने प्रवन्ध भयो । पछि संवत् १९४२ त्यो पाठशाला त्यहाँवाट रणमुक्तेश्वरमा सऱ्यो । त्यहाँ राम्रो किसिमसंग चलन नसकेकोले महाराज वीर शम्सेरले रानी पोखरीको पश्चिम भागमा लामो ठूलो भवन बनाइ दरवारमा रहेको अंग्रेजी पढाउने स्कुल र संस्कृत पाठशाला पनि त्यही भवनमा तल र माथि तलामा गरी संवत् १९४८ मा सुव्यवस्थित गरी राखिदा सर्वसाधारण शिक्षाको राम्रो जग बस्यो । त्यस पाठशालामा वेद, व्याकरण, काव्य, ज्योतिष आदि पढाउने १० जना विद्यन नियुक्ति थिए ।' पृ. १२ राष्ट्रिय शिक्षा योजना आयोग २०१० ।

90 'शास्त्री, आचार्य पढने छात्राका निमित्त काशीमा पढने नेपाली छात्रा १० जनालाई छात्रावृत्ति दिने प्रवन्ध पनि वीर शम्सेरवाट भएकोमा पछि बढदै गएर २०-२५ जनासम्मले छात्रवृत्ति पाउने भए ।' पृ. १३ राष्ट्रिय शिक्षा योजना आयोग २०१० ।

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १२६

प्रजातन्त्रको स्थापनापछि गठित राष्ट्रिय शिक्षा योजना आयोग (वि.सं. २०१०) ले मातृभाषामा शिक्षाको पक्षमा सूचना संकलन र विश्लेषणको क्रममा कक्षा २ सम्म पाठ्यक्रम बनाउनुपर्ने उल्लेख गरे तापनि सिफारिशमा कतै उल्लेख गरेन । बुँदाबुँदामा नेपाली भाषामा मात्र जोड दिएको पाइन्छ । बरू यसले विद्यालयको प्रांगणमा समेत गैरखस भाषा बोल्न नदिन सिफारिश गर्‍यो । त्यस आयोग समक्ष त्यति बेलाका मातृभाषीहरूले मातृभाषाको पक्षमा केही गतिला सुभावा प्रस्तुत गरेका थिए, जस्तै- (१) मातृभाषाको माध्यमद्वारा शिक्षा दिएमा केटाकेटीहरूले लेखपढ गर्न सक्छन्, (२) मातृभाषाउपर त्यही हदसम्म प्रेम हुनु पर्दछ जसबाट राष्ट्रभाषाउपर अरुचि पैदा नहोस् (३) मातृभाषाको मध्यामद्वारा शिक्षा दिनाले देशका अवउन्नत भाषाको उन्नति हुनगइ राष्ट्रको सर्वोत्तमोख विकासका साथै सबै जात समाजका मनिसहरूको सहयोग प्राप्त हुन्छ । (३) मातृभाषामा सबै जात समाजका मानिसहरूलाई पाठ्यपुस्तक प्रकाश गर्ने अधिकार दिनाले सरकारको सुकीर्ति फैलिन्छ आदि ।<sup>91</sup>

तर उक्त आयोगले मातृभाषीहरूले प्रस्तुत गरेका सुभावाप्रति कुनै ध्यान दिएन बरू यस आयोगले मातृभाषालाई समाप्त पार्ने नीति तय गरे । प्रतिवेदनमा 'नेपाली भाषा नै पढाईको माध्यम हुनु पर्दछ'<sup>92</sup>, 'नेपाली भाषाबाहेक नेपालका अन्य भाषाको अध्ययनले नेपाली भाषाको प्रभावपूर्ण विकासमा बाधा दिनेछ, किनभने घरमा र समाजमा विद्यार्थीले नेपालीभन्दा अरू भाषालाई बढता प्रयोगमा ल्याउने भएमा नेपाली एक विरानु भाषा हुनेछ । यदि केटाकेटीहरूलाई प्रारम्भिक भाषाको रूपमा नेपाली नै सिकायो भने अरू भाषाहरू क्रमशः गौण हुनेछन्'<sup>93</sup> भन्ने जस्ता मातृभाषाहरूको घाँटी निमोठेर हत्या गर्ने खालका सिफारिश गर्‍यो र यहाँसम्म कि 'नेपाली भाषाबाहेक अरू स्थानीय भाषा उपभाषालाई लडकाको जीवनसम्बन्धी मुख्य स्कुल र खेल्ने मैदानबाट शीघ्रातिशीघ्र हटाउन आवश्यक छ'<sup>94</sup> भनी खेल्न ठाउँमा समे

91 (हे. पृ. ३९)

92 (पृ. ११६)

93 (पृ. १०८)

94 (पृ. १०७-१०८)

त बोल्न नपाइने सिफारिश गरेको थियो ।

सरकारले पनि यसै प्रतिवेदनलाई आधार मानेर २०१४ अशोज २६ मा भाषासम्बन्धी विभेदकारी नीति प्रकाशनमा ल्याएको थियो । यसप्रति मातृभाषीहरूको तर्फबाट कडा प्रतिकार भएपछि सरकारले आफ्नो भाषा नीति फिर्ता लिदै मातृभाषाप्रति विभेद नगरिने र सरकारको भाषा नीति प्रजातान्त्रिक र उदार रहेको सूचना जारी गर्नु परेको थियो ।<sup>१५</sup> तर

१५ २०१४ साल असोज २६ गतेका शिक्षा मंत्रालयले नेपाली भाषाको माध्यमप्रति सरकारको नीति जारी गरेको थियो - : (१) साधारण नेपाली भाषाको माध्यमद्वारा पढाइ चालु हुनुपर्दछ, (२) विशेष परिस्थिति र स्थानीय आवश्यकता पर्न आएमा नेपाल सरकार शिक्षाविभागको अनुपति प्राप्त गरी मात्र स्थानीय भाषाको माध्यमद्वारा पढाई चालु गर्न सकिनेछ । तर एस.एल.सी. परिक्षामा नेपाली अंग्रेजी मात्र साधारण माध्यम रहनेछ । पढाउने शिक्षकहरूमध्ये ७५ प्रतिशत शिक्षकले नेपाली भाषाको प्रवेशिका स्तरको ज्ञान २०१६ सालको अन्तसम्म हासिल गरिसकेको हुनुपर्दछ । (३) नेपालभरका प्रत्येक स्तरका स्कूलहरूमा काम गर्ने शिक्षकले नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र हासिल गरेको हुनुपर्दछ अथवा त्यस सम्बन्धमा नेपालसरकार शिक्षाविभागको स्वीकृति ६ महिनाभित्र लिनुपर्नेछ । (४) प्रत्येक स्तरका स्कूलका पाठ्यपुस्तक नेपालसरकार शिक्षा विभागले स्वीकृति दिएको हुनुपर्दछ । यसै गरी ०१।७।७१ मा सरकारले भाषाप्रतिको अर्को विज्ञापित प्रकाशित गरेको थियो (देवकोटा १९६०:५४७) - : (क) नेपाल सरकारको स्वदेशभित्र प्रचलित भाषा, उपभाषासम्बन्धी नीति उदार तथा प्रजातांत्रिक रहेको छ । (ख) नेपालका कुनै क्षेत्रमा कुनै समूहले बोलिने वा प्रचलन गरिने कुनै जातीय, स्थानीय भाषालाई दबाउने नीति न सरकारले अपनाएको छ न अपनाउनेछ । सरकारको यो धारणा छ कि प्रत्येक भाषाभाषी कुनै नेपाली जनसमुदाय वा जातिले मिली भाषा वा उपभाषाको विकासार्थ आफ्नो उचित मात्राको प्रजातांत्रिक अधिकार सदासर्वदा राख्दछन् । (ग) नेपाली भाषा चिरकालदेखि प्रशासकीय भाषाको स्तरमा चढी व्यापकता तथा बल प्राप्त गरिकेको विषयमा कुनै शंका नै उठ्न नसक्ने हुनाले तथा राष्ट्रको एकता संगठनको प्रमुख साधन वर्तमान परिस्थिति यही भाषा देखिन गएकोले यसको यथेष्ट जानकारी प्रत्येक नेपाली नागरिकका निमित्त अत्यावश्यक छ भन्ने सरकारले महसूस गरेको छ । तदनुसार प्राथमिक स्तरसम्म पाठशालाहरूमा अन्य क्षेत्रीय वा जातीय भाषा, उपभाषालाई सरकारले स्थान दिएको छ । साथसाथै माध्यमिक स्तरदेखि नै उपर हाई स्कूलहरूमा नेपाली भाषाको माध्यम राख्नाले यसको आवश्यक जानकारीको अभिवृद्धि भई विकासशील प्रजातांत्रिक युगमा नेपाली नागरिक तथा कर्मचारीको कार्यकुशलताको अभिवृद्धि रहोस् भन्ने सरकारी सदुद्देश्य हो । (घ) नेपाली भाषा अतिरिक्त अन्य क्षेत्रीय वा जातीय भाषा र

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १२८

सरकारले गरेको वचनवद्धता १५ सालको संविधान र कार्यक्रमहरूमा प्रतिविम्बित भएको कतै देखिएन । भ्रम विभेदकारी र निरंकुश भएको देखिन्छ ।

यस्तै २०१८ सालको शिक्षा आयोगले पनि मातृभाषामा शिक्षाबारे एक शब्द पनि लेखेन । संस्कृत भाषाको वखान गरेर संस्कृत पढनेहरूका लागि खानपिन बसोबाससहित पकेट मनीको पनि व्यवस्था गर्‍यो । राष्ट्रिय शिक्षा पद्धति (२०२८) पनि उही डचाडको मुला सावित भयो मातृभाषीहरूका । सुधारिएको पञ्चायतकालमा गठन शिक्षा आयोग (२०४०)ले पनि यस परम्परालाई नाघ्न चाहेन ।

प्रजातन्त्र पुनर्स्थापनापछि ४ ओटा शिक्षा आयोगहरू (२०४९-२०५८) गठन भए ती सबै आयोगहरूले मातृभाषाको सन्दर्भमा केही सिफारिश गरे तर कुनै पनि सिफारिस कार्यान्वयन भएको देखिएन । वास्तवमा ती सिफारिस कार्यान्वयनको लागि नभइ मातृभाषीलाई आकर्षित गर्नका लागि मात्र थियो । र प्रतिवेदनहरू मन्त्रालयको दराजको शोभा बढाउन मात्र सहयोगी भए ।

### शिक्षाको सम्बन्धमा महासन्धि १६९ ले गरेको व्यवस्था

महासन्धि १६९ लागू भएपछि नेपाल सरकारले तयार गरेको महासन्धि कार्यान्वयन कार्ययोजना-२०६६ ले शिक्षाको सम्बन्धमा निम्न तीन उद्देश्यहरू तय गरेको छः

- (क) आदिवासी जनजातिहरूको शिक्षामा पहुँच अभिवृद्धि गर्ने;
- (ख) शिक्षामा आदिवासी जनजातिहरूको मातृभाषाको प्रयोगलाई प्रवर्द्धन गर्ने; र

---

उपभाषाहरूलाई अनुपातिक वजन र महत्त्वको ख्याल राखी नेपाल सरकारले तिनको विकासार्थ यथाशक्य प्रोत्साहन र सहायता गर्ने नीति अपनाएको छ ।

यसरी प्रजातान्त्रिक सरकारले नेपाली भाषाप्रति एकतर्फी भुकाव राख्यो । तत्कालिन नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी, केन्द्रीय कार्य समितिले “शिक्षा विभागद्वारा प्रकाशित नेपाली भाषा माध्यम नीतिको घोर निन्दा गर्दै क्षेत्रीय प्रचलित भाषाद्वारा नै पढाई हुनुपर्दछ भन्ने निर्णय” गरेका थियो (देवाकोटा १९६०:४५८) ।

(ग) आदिवासीहरूलाई सबै तहको शिक्षामा समान हैसियतमा (Equal Footing) शिक्षा आर्जन गर्ने अवसर सुनिश्चित गर्ने ।

अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठनको महासन्धि नं. १६९ को धारा २६, २७(१), २७(२), २७(३), २८ (१), २९ र ३१ मा शिक्षा सम्बन्धि प्रावधान रहेको छ । धारा २६ ले आदिवासी जनजाति समुदायका सदस्यहरूलाई शिक्षाका सबै तहमा समान आधारमा (Education at all levels on an equal footing) अवसरहरू प्रदान गर्ने उपायहरूको अवलम्बन गर्ने भनिएको छ । धारा २७(१) ले शैक्षिक कार्यक्रम निर्माण तथा कार्यान्वयन गर्दा उनीहरूको इतिहासहरू, ज्ञान तथा प्रविधिहरू र मूल्य पद्धतिहरू (Value System) सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक चाहनाहरूलाई समावेश गरिने भनिएको छ भने धारा २७(२) ले समुदायलाई जिम्मेवारी हस्तान्तरण उद्देश्यले शैक्षिक तालिम र कार्यक्रम निर्माणमा संलग्न गराउने भनिएको छ र धारा २७(३) ले समुदायको शैक्षिक संस्थाहरूलाई उपयुक्त स्रोतहरू उपलब्ध गराइने भनिएको छ ।

यसै गरी धारा २८(१)ले बालबालिकाहरूलाई मातृभाषामा शिक्षा दिने व्यवस्था गरेको छ । धारा २९ले समुदायका बालबालिकाहरू आफ्नो समुदाय र राष्ट्रिय समुदायमा समान आधारमा सहभागी हुन सघाउने खालका हुने भनिएको छ र धारा ३१ ले समुदायप्रति रहेका पूर्वाग्रहहरू निर्मूल गर्ने उद्देश्यका साथ उनीहरूका समाज तथा संस्कृतिका बारेमा न्यायपूर्ण, सही तथा सूचनामूलक चित्रहरू (a fair, accurate and informative portrayal of the societies and cultures) प्रस्तुत गर्न सकिने शैक्षिक उपायहरू अपनाइने कुराहरू उल्लेख गरिएको छ ।<sup>96</sup>

96 धारा २६ आदिवासी जनजाति समुदायका सदस्यहरूले कम्तीमा पनि राष्ट्रिय समुदायका अन्य सदस्यहरू सरह शिक्षाका सबै तहमा समान आधारमा अवसरहरू प्राप्त गर्न सक्नु भनेर सुनिश्चित गर्न उपायहरू अवलम्बन गरिनेछ । धारा २७(१) आदिवासी जनजाति समुदायहरूका लागि उनीहरूकै विशेष आवश्यकतालाई सम्बोधन गर्न उनीहरूकै सहयोगमा शैक्षिक कार्यक्रम तथा सेवाहरू विकसित एवं कार्यान्वित गरिनेछन् र यसका साथै उनीहरूका इतिहासहरू, ज्ञान र प्रविधिहरू, उनीहरूका मूल्य प्रणालीहरू र उनीहरूका सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आकांक्षाहरूलाई पनि समावेश गरिनेछ । धारा २७(२) सम्बन्धित सक्षम निकायले

धारा २८(१) आदिवासी जनजाति समुदायका बालबालिकाहरूलाई व्यवहारिक भएसम्म उनीहरूकै मातृभाषामा वा उनीहरूको समुहमा सबैभन्दा बढी बोलिने भाषामा पढन र लेख्न सिकाइनेछ। यो व्यवहारिक नभएमा सक्षम अधिकारीहरूले यो उद्देश्य हासिल गर्ने उपायहरू अपनाउने अभिप्रायले यस्ता समुदायसंग परामर्श गर्नेछन्।

शिक्षासम्बन्धी माथि उल्लेखित ७ ओटा प्रावधानहरूले १० ओटा शैक्षिक मुद्दाहरूलाई उठाएको छ। यीमध्ये ६ ओटा मुद्दालाई सरकारले सम्बोधन गर्न खोजेको छ र बाकी मुद्दा सम्बोधन गर्न बाँकी नै छ।

शैक्षिक कार्यक्रमहरूको सञ्चालनको जिम्मेवारी उपयुक्त भएसम्म क्रमिक रूपले सम्बन्धित समूहहरूलाई जिम्मेवारी हस्तान्तरण गर्ने उद्देश्यले समूहका सदस्यहरूको तालिमका साथै शैक्षिक कार्यक्रमहरूको निर्माण तथा कार्यान्वयनमा ती समूहहरूको संलग्नता सुनिश्चित गर्नेछ। धारा २७.३ यसका अतिरिक्त सम्बन्धित समुदायहरूको आफ्नो शैक्षिक संस्था तथा सुविधाहरू स्थापना गर्ने उनीहरूको अधिकारलाई सरकारले मान्यता दिइने छ। यसका लागि सम्बन्धित सरकारी निकायले ती समुदायहरूसंगको परामर्शमा स्थापित गरेका न्यूनतम मापदण्डहरूलाई ती शैक्षिक संस्थाहरूले पालना गर्नुपर्ने छ। यस उद्देश्यका लागि उपयुक्त स्रोतहरू उपलब्ध गराइनेछ।

धारा २८(१) आदिवासी जनजाति समुदायका बालबालिकाहरूलाई व्यवहारिक भएसम्म उनीहरूकै मातृभाषामा वा उनीहरूको समुहमा सबैभन्दा बढी बोलिने भाषामा पढन र लेख्न सिकाइनेछ। यो व्यवहारिक नभएमा सक्षम अधिकारीहरूले यो उद्देश्य हासिल गर्ने उपायहरू अपनाउने अभिप्रायले यस्ता समुदायसंग परामर्श गर्नेछन्।

धारा २९ आदिवासी जनजाति समूहहरूप्रति लक्षित शिक्षाको उद्देश्य उनीहरूका बालबालिकाहरूलाई आफ्नो समुदायमा र राष्ट्रिय समुदायमा पूर्णरूपमा र समान तवरले सहभागी हुन सघाउने उद्देश्यले सामान्य ज्ञान तथा सीपहरू प्रदान गर्नु रहेको छ।

धारा ३१ राष्ट्रिय समुदायका सबै क्षेत्रहरूमा तथा खास गरेर यी समूहहरूसंग प्रत्यक्ष रूपमा सम्पर्कमा रहेका समुदाय तथा व्यक्तिहरूमा यी समूहहरूप्रति विद्यमान हुन सक्ने पूर्वाग्रहहरूलाई निर्मुल पार्ने उद्देश्यले शैक्षिक उपायहरू अवलम्बन गरिनेछन्। यस उद्देश्यका लागि इतिहासका पाठ्यपुस्तक तथा अन्य शैक्षिक सामग्रीहरूले सम्बन्धित समूहहरूको समाज तथा संस्कृतिहरूका बारेमा न्यायपूर्ण, सही तथा सूचनामूलक चित्रहरू प्रस्तुत गरुन भनेर सुनिश्चित गर्न प्रयासहरू गरिनेछन्।

- (१) मातृभाषामा शिक्षाको व्यवस्था गर्ने (धारा २८.१) ।
- (२) शैक्षिक कार्यक्रम तथा सेवाहरूमा इतिहास, ज्ञान र प्रविधि, आदिवासीहरूको मूल्य प्रणालीहरूलाई समावेश गर्ने (धारा २७.१) ।
- (३) शैक्षिक कार्यक्रमहरू संचालनको जिम्मेवारी हस्तान्तरण गर्नका लागि तालिम, शैक्षिक कार्यक्रम निर्माण तथा कार्यान्वयनमा संलग्नता गराउने (धारा २७.२) ।
- (४) सरकारले समुदायको शैक्षिक संस्थालाई मान्यता दिने र त्यस्ता शैक्षिक संस्था संचालनको लागि समुदायसंगको परामर्शमा न्यूनतम मापदण्ड तयार गर्ने र उपयुक्त स्रोतहरू उपलब्ध गराउने (धारा २७.३) ।
- (५) शैक्षिक कार्यक्रम तथा सेवाहरूमा आदिवासीहरूको सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आकांक्षाहरूलाई समावेश गर्ने (धारा ३१) ।
- (६) आदिवासी समुदायप्रति हुनसक्ने पूर्वाग्रह निर्मुल पार्न पाठ्यपुस्तक तथा शैक्षिक सामग्री आदिवासी मैत्री बनाउने (धारा ३१) ।
- (७) उनीहरूका समाज तथा संस्कृतिहरूका बारेमा न्यायपूर्ण, सही तथा सूचनामूलक चित्रहरू प्रस्तुत गर्ने (धारा ३१) ।
- (८) विशेष आवश्यकतालाई सम्बोधन गर्न शैक्षिक कार्यक्रम तथा सेवाहरू विकसित र कार्यान्वयित गर्ने (धारा २७.१) ।
- (९) आफ्ना समुदाय र अन्य समुदायमा पूर्णरूपमा र समान तवरले सहभागी गराउनका लागि सामान्य ज्ञान र सीपहरू प्रदान गर्ने (धारा २९) ।
- (१०) शिक्षाका सबै तहमा समान आधारमा अवसरहरू प्राप्त गर्ने उपायहरू अवलम्बन गर्ने (विद्यालय स्थापना, शिक्षक व्यवस्था आदि) (धारा २६) ।



## अद्यावधिक स्थितिको समीक्षा

नेपालको संविधान, २०७२ ले मौलिक हक अन्तर्गतको धारा ३१(५)मा मातृभाषाको माध्यमबाट शिक्षाको हकको स्थापना गरेको छः

धारा १७(१) 'नेपालमा बसोबास गर्ने प्रत्येक नेपाली समुदायलाई कानून बमोजिम आफ्नो मातृभाषामा शिक्षा पाउने र त्यसका लागि विद्यालय तथा शैक्षिक संस्था खोल्ने र संचालन गर्ने हक हुनेछ'

यहाँ 'मातृभाषामा शिक्षा पाउने हक हुनेछ' र 'त्यसका लागि विद्यालय तथा शैक्षिक संस्था खोल्ने र संचालन गर्ने हक हुनेछ' भनिएको छ । यसै गरी शिक्षा ऐन २०२८ (संशोधनसहित २०६३), राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप २०६३ ले पनि संविधानको भावनालाई बोकेको छ । तीन वर्षीय अन्तरिम योजना (२०६४/६५-२०६६/६७) ले 'शिक्षालाई अधिकारमा आधारित विकास कार्यक्रमका रूपमा अघि बढाइनेछ' (पृ.३०) भनिएको छ । यस सम्बन्धी विस्तृत चर्चा तल गरिएको छ ।

## शिक्षाको माध्यम: मातृभाषा

आदिवासी जनजाति समुदायका बालबालिकाहरूलाई व्यवहारिक भएसम्म उनीहरूकै मातृभाषामा ..... पढन र लेख्न सिकाइनेछ भनिएको छ । - महासन्धि १६९ को धारा २८(१)

यसै गरी संविधानको धारा १७ (१) ले 'आधारभूत शिक्षा मातृभाषामा हुनेछ' भनेर मातृभाषामा शिक्षाको व्यवस्था गरेको छ । विद्यालय शिक्षाको सन्दर्भमा 'आधारभूत' भनेको कक्षा १ देखि ८ सम्मको शिक्षा हो ।<sup>१७</sup> यसैगरी 'मातृभाषामा' शब्दावलीले मातृभाषाको माध्यममा दिइने शिक्षा भन्ने बुझाउँछ । शिक्षा ऐन, २०२८ (संशोधनसहित २०६३) को दफा ७.२(ख) ले 'प्राथमिक तहसम्मको शिक्षा मातृभाषामा दिन सकिने' भनिएको छ । यसै गरी राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूपले कक्षा

३ सम्मको शिक्षा मातृभाषामा दिने व्यवस्था गरेको छ । स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन २०५५ र निमयावली २०५६ ले पनि गाउँ विकास समिति, नगरपालिका र जिल्ला विकास समितिको काम कर्तव्य र अधिकारअन्तर्गत 'शिक्षा तथा खेलकुद सम्वन्धी' र 'भाषा तथा संस्कृति सम्वन्धी' दफाहरूमा मातृभाषामा शिक्षा दिन सहयोग पुऱ्याउने भनिएको छ । यसै गरी मातृभाषामा शिक्षा दिने उद्देश्यले नेपालको सन्दर्भमा सबैको लागि शिक्षा सातौँ लक्ष्य स्थापना गरेको थियो । यस अनुरूप सबैको लागि शिक्षा राष्ट्रिय कार्ययोजना २००१-२०१५ तयार गरिएको छ । तीन वर्षीय अन्तरिम योजना (२०६४/६५ - २०६६/ २०६७) मा मातृभाषामा प्राथमिक शिक्षा प्राप्त गर्न पाउने अधिकारको सुनिश्चितताको लागि मागको आधारमा कार्यक्रम विस्तार गर्दै लगिने छ भनिएको छ । सबैको लागि शिक्षा राष्ट्रिय कार्ययोजना (२००१-२०१५) मा ६ ओटा लक्ष्य निर्धारण गरेकोमा नेपालले सातौँ लक्ष्यको व्यवस्था गरेको थियो

‘आदिवासी जनजाति र भाषिक अल्पसंख्यक समुदायका लागि मातृभाषामा आधारभूत तथा प्राथमिक शिक्षा प्राप्त गर्न पाउने अधिकार सुनिश्चित गर्ने’ ।

यी सबै व्यवस्था हुँदाहुँदै पनि केही असमझदारी र ग्याप (खाल्टो) देखिएको छ । स्थानीय स्वायत्त शासन ऐनले २०५५ सालमा नै मातृभाषामा शिक्षा दिन व्यवस्था अनुरूप सहयोग गर्ने सो ऐनका दफाहरूमा नै सिमित रहेको र कतै कार्यान्वयन भएको देखिएन । अन्तरिम संविधानले आधारभूत तह (कक्षा १-८) सम्म गरेको व्यवस्थालाई शिक्षा ऐनले प्राथमिक तह (कक्षा १-५) सम्म झारेको र राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूपले कक्षा ३ मा सिमित पारेकोले संविधान भन्दा ऐन ठूलो र ऐन भन्दा पाठ्यक्रम भन् ठूला र शक्तिशाली बनेको जस्तो देखिन्छ । यसले कानूनी राज्यको मर्यादा उलङ्घन भएको हो कि ? आइएलओ महासन्धि १६९ ले भने जस्तो राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप तयारीको क्रममा मातृभाषी समुदायको रायसरसल्लाह लिएको पनि देखिदैन । भाषा संरक्षण र शिक्षकको सन्दर्भमा सबैको लागि शिक्षा राष्ट्रिय कार्ययोजना २००१-२०१५ पल्टाउएको जस्तो लाग्दैन ।

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १३४

यसै गरी राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूपले तय गरेको कक्षा ४-५ सम्म मातृभाषामा कि नेपाली भाषाको माध्यममा पठनपाठन गर्ने प्रष्टता छैन । मातृभाषी आँखाबाट हेर्दा मातृभाषामा देखिन्छ भने प्रशासनको आँखाबाट हेर्दा नेपाली भाषाको माध्यमबाट पठनपाठन भनेर दोहोरो अर्थ लाग्ने गरी भाषा सम्पादन गरिएको छ । यसरी आफूखुशी अर्थ लाग्ने नीति राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूपमा देखिएको छ । यसैगरी अन्तरिम संविधान, शिक्षा ऐन र राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप तय भएर लागू भइसक्दा पनि पुराना पाठ्यक्रम नै जारी छ, परिमार्जन गरिएको छैन । मातृभाषा विषयको रूपमा पठनपाठन भइरहेको छ, त्यसैलाई प्रोत्साहित गरिराखेको छ । पाठ्यक्रमले तय गरेको मातृभाषाको शिक्षाको ठाउँमा खुलेआम अंग्रेजी पढाइ राखेका छन् । यो अवैधानिक आँटलाई शिक्षाका सबै क्षेत्र र तहले प्रोत्साहित गरिरहेका छन् ।

यी सबै कमिकमजोरी हुँदाहुँदै पनि फिन्ल्याण्ड सरकारको प्राविधिक सहयोगमा नेपाल सरकारले सन् २००७ जनवरीदेखि बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ गर्‍यो र यसअन्तर्गत ८ ओटा मातृभाषाको माध्यमबाट शिक्षा प्रारम्भ गरेको छ ।<sup>१८</sup> प्रारम्भमा प्राथमिक तह (कक्षा १-३) मा ७ वटा विद्यालयमा ८ वटा मातृभाषामा पठनपाठन भइरहेकोमा विद्यालयको संख्या बढेर २३ पुगेको छ । बहुभाषिक शिक्षा कार्यक्रम संचालन गर्न बहुभाषिक शिक्षा निर्देशिका २०६६ शिक्षा मन्त्रालयबाट पारित भएको छ । अब बहुभाषिक शिक्षा भाषिक समुदायले चाहेमा विद्यालय व्यवस्थापन समितिले नै लागू गर्न सकिने प्रावधान यस निर्देशिकाले व्यवस्था गरेको छ ।

### आदिवासी मैत्री शैक्षिक सामग्रीको विकास

महासन्धिको धारा २७ (१)मा शैक्षिक कार्यक्रम तथा सेवाहरूमा इतिहास, ज्ञान र प्रविधि, आदिवासी जनजातिहरूको मूल्य प्रणालीहरूलाई समावेश गर्ने र यसता कार्यक्रम तथा सेवाहरूमा आदिवासीहरूको सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आकांक्षाहरूलाई समावेश गर्ने प्रावधान छ,

---

१८ कञ्चनपुरको रानाथारू, पाल्पाको पाल्पा-मगर, रसुवाको रसुवा-तामाङ, धनकुटाको आठपहरिया राई, सुनसरीको उराव र पूर्वीय थारू एवं भ्रपाको सन्थाली र राजवंशी भाषामा ।

जस्तै:

धारा २७(१) आदिवासी जनजाति समुदायहरूका लागि उनीहरूकै विशेष आवश्यकतालाई सम्बोधन गर्न उनीहरूकै सहयोगमा शैक्षिक कार्यक्रम तथा सेवाहरू विकसित एवं कार्यान्वित गरिनेछन् र यसका साथै उनीहरूका इतिहासहरू, ज्ञान र प्रविधिहरू, उनीहरूका मूल्य प्रणालीहरू र उनीहरूका सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आकांक्षाहरूलाई पनि समावेश गरिनेछ ।

यस धारालाई सम्बोधन गर्न पाठ्यक्रम विकास केन्द्रबाट केही प्रयास भएको पाइन्छ । एकसय पूर्णांकको मातृभाषाको पाठ्यपुस्तक निर्माण गर्ने अधिकार भाषिक समुदायलाई नै छ । भाषिक समुदायले आफ्ना मूल्य मान्यताका आधारमा पाठ्यपुस्तक लेख्न सक्ने प्रावधान छ । यस आधारमा १२ ओटा मातृभाषामा पाठ्यसामग्री तयार भएका पनि छन् ।<sup>१६</sup> यसैगरी 'सामाजिक अध्ययन, सिर्जनात्मक कला र र शारीरिक शिक्षा विषयको २० प्रतिशन पाठ्यभारको पाठ्यक्रम र पाठ्यसामग्री विद्यालय आफैले निर्माण गर्न सक्ने' प्रावधान छ । यसबाट स्थानीय भाषिक समुदायको सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आकांक्षाहरू सम्बोधन हुन सक्ने देखिन्छ । तर यो व्यवस्था महासन्धि १९९ लागू गर्नुभन्दा अगाडि नै सबै विद्यालयको लागि गरिएको व्यवस्था हो अर्थात् आदिवासी जनजाति समुदायलाई लक्षित गरेर तयार गरेको होइन ।

यसैगरी बहुभाषिक शिक्षा संचालन भइरहेको विद्यालयमा कक्षा १ देखि ३ सम्मका नेपाली र अंग्रेजी भाषा बाहेकका विषयहरू मातृभाषामा नै तयार भएका छन् । वर्तमान पाठ्यक्रममा टेकेर विद्यालय परिवारले पाठ्यपुस्तक बनाएर छाप्ने गरेको देखिन्छ । यस व्यवस्थाले धारा २७(१) लाई निकै राम्रोसंग सम्बोधन गरेको छ । यसलाई थप परिमार्जन गरेर पूर्णरूप दिनसकिन्छ ।

### पूर्वाग्रह निर्मूल पार्ने प्रयास

---

११ थारू, नेवारी, लिम्बू, तामाङ, गुरुङ, मगर, बान्तावा, चाम्लिङ, शेर्पा, सुनुवार, राजवंशी र याक्खा भाषा ।

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १३६

यसै गरी पाठ्यपुस्तक तथा शैक्षिक सामग्रीहरूमा आदिवासी जनजातिहरूप्रति हुनसक्ने पूर्वाग्रहहरूलाई निर्मुल गर्न भनिएको छ :

धारा ३१ राष्ट्रिय समुदायका सबै क्षेत्रहरूमा तथा खास गरेर यी समूहहरूसंग प्रत्यक्ष रूपमा सम्पर्कमा रहेका समुदाय तथा व्यक्तिहरूमा यी समूहहरूप्रति विद्यमान हुन सक्ने पूर्वाग्रहहरूलाई निर्मुल पार्ने उद्देश्यले शैक्षिक उपायहरू अवलम्बन गरिनेछन् । यस उद्देश्यका लागि इतिहासका पाठ्यपुस्तक तथा अन्य शैक्षिक सामग्रीहरूले आदिवासी जनजाति समुदायको समाज तथा संस्कृतिहरूका बारेमा न्यायपूर्ण, सही तथा सूचनामूलक चित्रहरू प्रस्तुत गर्नु भनेर सुनिश्चित गर्न प्रयासहरू गरिनेछन् ।

नेपालको संविधान, २०७२ को धारा १८ ले सबै नागरिकलाई समानताको हक प्रदान गरेको छ।<sup>100</sup> यसै गरी सबै प्रकारका विभेद अन्त्य गरी सभ्य र समतामूलक समाजको निर्माण गर्ने (५०.२) र सामाजिक र सांस्कृतिक रूपान्तरण सम्बन्धी नीति (५१.ग) राज्यले लिएको छ। यी धाराहरूलाई सम्बोधन गर्न पाठ्यक्रम विकास केन्द्रले पाठ्यपुस्तकभित्र रहेका चित्र, अपशब्द, घोंचपेच जस्ता पूर्वाग्रही शब्दावली हटाने प्रयास गरेको छ। पहिले पहिलेका पाठ्यपुस्तकमा मगरले गोरु जोत्ने, तामाडले भारी बोक्ने जस्ता जातीय अपमानका सामग्रीहरू पाठ्यपुस्तकमा नै प्रकाशन हुने गर्दथे। यसै गरी पाठ्यपुस्तकमा उल्लेख हुने विभिन्न पात्रहरू पनि जातीय विभेदपूर्ण र पूर्वाग्रहपूर्ण हुने गर्दथे। विश्वविद्यालय, लोकसेवा तथा अन्य क्षेत्रका पुस्तकहरूमा यस प्रकारका पूर्वाग्रहीयुक्त सामग्री हुन सक्दछ।

### अन्य शैक्षिक कार्यक्रम

शैक्षिक कार्यक्रमहरू संचालनको जिम्मेवारी हस्तान्तरण गर्नका लागि तालिम, शैक्षिक कार्यक्रम निर्माण तथा कार्यान्वयनमा संलग्नता गराउने कुरा महासन्धिको धारा २७(२) मा उल्लेख छ, तर प्रकारको प्रयास हुन सकेको छैन। यसै गरी आदिवासी जनजाति समुदायका शैक्षिक

---

100 सामान्य कानूनको प्रयोगमा कुनै पनि नागरिमाथि धर्म, वर्ष, लिङ्ग, जात, जाति, उत्पत्ति, भाषा वा वैचारिक आस्था वा ती मध्ये कुनै कुराको आधारमा भेदभाव गरिने छैन।

संस्थाहरू पहिचान गरिसकेको अवस्था छैन । हाल गुम्वा शिक्षालाई मूलधारमा ल्याउने प्रयास भएको छ वा मान्यता दिएको मात्र हो त्यो जाँचन सकिएन । जे भए पनि त्यस तर्फ सरकारको ध्यान गएको देखिन्छ । सरकारले पाठ्यपुस्तकहरूमा आदिवासी जनजातिवारेको पूर्वग्राही सामग्री हटाउने प्रयास गरेता पनि अबै उनीहरूका समाज तथा संस्कृतिहरूका बारेमा न्यायपूर्ण, सही तथा सूचनामूलक चित्रहरू प्रस्तुत गरुन भनेर सुनिश्चित गर्न प्रयासहरू हुनसकेको छैन ।

यसै गरी पाठ्यक्रम विकास केन्द्रले कक्षा १-५ सम्मको पाठ्यक्रममा मातृभाषालाई ऐच्छिक विषयको रूपमा राखेको छ र यस अनुरूप १२ ओटा मातृभाषाको पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक तयार गरेको छ (हे. फुटनोट नं. १९) । ती भाषाहरूमा पठनपाठन भइरहेको छ । यसै गरी शैक्षिक जनशक्ति विकास केन्द्रले १५ ओटा मातृभाषामा बहुभाषिक शिक्षाको शिक्षक तालिम प्याकेज तयार गरी तालिम पनि संचालन गरेको छ । अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रबाट पाँच ओटा मातृभाषा (तामाङ, थारू, मगर, नेवारी र लिम्बू) मा अनौपचारिक शिक्षाको पाठ्यसामग्री तयार गरेका छन् ।

### मुद्दा तथा चुनौतीहरू

अन्तरिम संविधान, २०६३ मा आधारभूत शिक्षा मातृभाषामा हुनेछ भनिएता पनि शिक्षा ऐनले कक्षा ५ सम्म दिनसकिने भनिएको छ । यसैगरी राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूपले मातृभाषामा शिक्षा कक्षा ३ सम्म मात्र भनिएको छ । यो द्विधायुक्त छ । ऐनकानूनका प्रावधानहरू संविधानका धाराभन्दा माथि पुगेको देखिन्छ । यहाँ बुझाइमा ग्याप देखिएको छ । शिक्षा नीति तथा रणनीतिको सन्दर्भमा यसलाई चुनौतीको रूपमा हेरिन्छ । कक्षा ३ सम्म मातृभाषामा पठनपाठन भइसकेपछि कक्षा ४ देखि बालबालिकाले नेपाली माध्यममा पढन बाध्य भएका छन् । यस प्रकारको व्यवस्थाले मातृभाषाको शिक्षा कमजोर हुनेछ र समुदायमा नकारात्मक असर पर्ने देखिन्छ । बहुभाषिक शिक्षाका विज्ञहरूले कक्षा ५ सम्म हुनु पर्दछ भनेर यस समस्यालाई पहिले नै प्रष्ट शब्दमा उल्लेख गरिसकेका छन् ।

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू • १३८

पूर्वप्राथमिक तहमा अर्थात् बाल विकास केन्द्रहरूमा आदिवासी जनजातिका बालबालिकालाई उनीहरूकै मातृभाषामा पठनपाठन हुनसकेको छैन । यसै गरी निमावि तहमा कुनै पनि मातृभाषाको पठनपाठन हुन सकेको छैन । उच्च मावि तथा आइए तहमा मातृभाषाको प्रयोग भएको छैन । माध्यमिक तहमा नेवारी भाषा पठनपाठन भइरहेको भएता पनि थप अन्य भाषामा पठनपाठन हुन सकेको छैन । मातृभाषाका शिक्षकशिक्षिका तथा बालबालिकाको तथ्यांक राख्न सकिराखेको छैन । यसै गरी धारा २७(२), २७(३) र २९ लाई सम्बोधन गर्न कुनै कार्ययोजना बनेको छैन ।

सबैका लागि शिक्षा राष्ट्रिय कार्ययोजना नेपाल (२००१-२०१५) ले 'आदिवासी जनजाति र भाषिक अल्पसंख्यकको जीवनोपयोगी सीप र संस्कृति अनुरूप मातृभाषाको माध्यममा प्राथमिक तहका सबै विषयहरूको शैक्षिक सामग्री तयार गर्ने र चरणबद्ध रूपमा क्रमैसंग लागु गर्दै जाने' (पृ. ५५) प्रतिपद्धता जाहेर गर्दै चार वटा रणनीतिहरू अख्तियार गरेका छन् - (१) मातृभाषालाई विषय तथा अध्यापन माध्यमको रूपमा प्रयोग गर्ने (२) द्वैभाषिक शिक्षा, (३) शिक्षकहरूको नियुक्ति, तालिम तथा पदास्थापना र (४) खतरामा परेका भाषा र संस्कृतिका निमित्त विशेष कार्यक्रम । तर तेस्रो र चौथो रणनीतिहरू अहिलेसम्म कार्यान्वयन गर्न सकेको छैन । यो प्रतिबद्धता जाहेर गरेको पनि दश वर्ष हुँदैछ ।

यसै गरी शिक्षा ऐन २०२८, प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम कक्षा १-३ (२०६२) र प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम कक्षा ४-५ (२०६५) तथा राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप (२०६३) आदि अन्तरिम संविधानको धारा अनुकुल परिमार्जन हुनसकेको छैन । प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रमहरूमा 'स्थानीय विषय/मातृभाषा' भनेर मातृभाषालाई ऐच्छिक विषयको रूपमा व्यवस्था गरेको छ । यो व्यवस्था महासन्धि १६९ अनुकुल छैन । नहुनुभन्दा कानो मामा निको भने भै मातृभाषीले स्वीकारेले यो छैँठौँ पत्रलाई विद्यालयहरूले यसको सट्टामा ऐच्छिक अंग्रेजीको पठनपाठन गरिराखेका छन् । यसरी भोकालाई दिएको खाना पनि खोसेको छ । यो ऐच्छिक अंग्रेजीको पठनपाठनको लागि कुनै ऐन, कानून वा पाठ्यक्रम आदिमा कुनै प्रावधान देखिँदैन । तर पनि यो अवैधानिक विषयको

पठनपाठन नेपालभरिका सरकारी विद्यालयहरूमा खुलेआम भइरहेको छ । सरकारलाई यसबारे ध्यानाकर्षण गराउँदा पनि कुनै चासो देखाएको छैन । आन्दोलनकर्मीहरूले यसलाई मातृभाषाको विरुद्ध सरकारीको अघोषित नीति हो भन्ने गरेका छन् ।

यसैगरी स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन-२०५५ र निमयावली (२०५६) ले पनि दफा २८घ(३) र दफा ९६घ(३)<sup>101</sup> मातृभाषामा शिक्षाबारे व्यवस्था गरेको छ तर यी दफा अनुसार कुनै गाविस वा नगरपालिकाभित्र मातृभाषामा कार्यक्रम संचालन भयो वा मातृभाषाका बालबालिकाले मातृभाषाको माध्यमबाट शिक्षा हासिल गरिरहेका छन् वा गरे भन्ने कतै सुन्न वा प्रकाशनमा आएनन् । छलफल क्रममा पनि कुनै पनि सहभागीहरूले यसबारे जानकारी दिएनन् । यसरी कानूनहरू निष्क्रिय पारिएका छन् ।

यस ऐनअन्तर्गत तयार गरिएको जिल्ला विकास समिति अनुदान संचालन कार्यविधि २०६६ र गाउँ विकास समिति अनुदान संचालन कार्यविधि २०६६ मा पनि मातृभाषामा शिक्षाको लागि कुनै दफा-उपदफाको व्यवस्था गरेको छैन । देशको मूल कानून संविधानमा हुने, स्थानीय स्वायत्त शासन ऐनमा हुने तर कार्यविधिमा नुहने यसलाई अनौठो नै मान्ने वा मातृभाषामा शिक्षा विरुद्धको षडयन्त्र भन्ने ? विषय मनननीय छ ।

## अबको बाटो

यी कार्यहरू सम्पन्न गर्न निम्नानुसारका सुझाव प्रस्तुत गरिन्छः

(१) नेपालको संविधान २०७२, आइएलओ महासन्धि सं. १६९ र यूएनड्रिप अनुसार नेपालका ऐन कानूनहरू यथाशक्य चाँडो परिमार्जन गरिनु पर्दछ ।

(२) स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन २०५४ का साथै नेपालको

101. दफा २८घ(३)मा गाउँ विकास क्षेत्रभित्र मातृभाषामा प्राथमिक तहको शिक्षा उपलब्ध गराउन सहयोग गर्ने र दफा ९६घ(३)मा नगरपालिका क्षेत्रभित्र मातृभाषामा प्राथमिक तहको शिक्षा उपलब्ध गराउन सहयोग गर्ने व्यवस्था गरेको छ ।'



संविधान २०७२ र शिक्षा ऐन (२०२८ संशोधनसहित २०६३) मा भएको मातृभाषामा शिक्षाको व्यवस्थालाई जिल्ला विकास समिति अनुदान संचालन कार्यविधि २०६६ र गाउँ विकास समिति अनुदान संचालन कार्यविधि २०६६ मा उल्लेख नगरिएकोले सो अनुरूप परिमार्जन वा संशोधन गर्नु आवश्यक छ ।

- (३) हाल छैठौँपत्रको रूपमा व्यवस्था भएको मातृभाषाको स्थानमा ऐच्छिक अंग्रेजी भाषाको पठनपाठन अवैधानिक देखिएकोले तुरुन्त बन्द गरिनु पर्दछ र मातृभाषालाई निरन्तरता दिनु पर्दछ ।
- (४) सबैको लागि शिक्षा राष्ट्रिय कार्ययोजना नेपाल (२००१-२०१५) मा व्यक्त प्रतिवद्धताहरू तुरुन्त लागु गरिनु पर्दछ ।
- (५) विद्यालय क्षेत्र सुधार योजना (२००९-२०१५) अनुरूपको योजनाहरू लागु गरिनु पर्दछ ।
- (६) बहुभाषिक शिक्षा कार्यान्वयन निर्देशिका २०६६ परिमार्जन गरी बहुभाषिक शिक्षा विस्तार गरिनु पर्दछ ।
- (७) बहुभाषिक शिक्षालाई उपलब्धमूलक बनाउन अहिलेको लागि कक्षा ५ सम्म पुऱ्याउनु आवश्यक छ ।
- (८) मातृभाषा शिक्षकको लागि विशेष कोटाको उचित व्यवस्था गर्नका साथै मातृभाषा शिक्षकको नियुक्ति तालिम तथा पदास्थापना गरिनु पर्दछ ।
- (९) आदिवासी समुदायका शैक्षिक संस्था तथा सुविधाहरू स्थापित गर्न र स्रोत उपलब्ध गराउन पहल गर्नु आवश्यक छ ।
- (१०) बालशिक्षा र अनौपचारिक शिक्षामा मातृभाषाको प्रयोगलाई बढाउनु आवश्यक छ ।
- (११) सरकारका सम्बन्धित सबै निकायहरूमा बहुभाषिक शिक्षा शाखाको स्थापना गर्नु आवश्यक छ ।
- (१२) आजउराप्र, नेपाल आदिवासी जनजाति महासंघसमेतको

एउटा आदिवासी जनजाति शिक्षा कार्यक्रम अनुगमन तथा मूल्यांकन टोली गठन गरिनु पर्दछ ।

(१३) शिक्षणको माध्यम र शिक्षाका भाषा सम्बन्धी एउटा विस्तृत नीतिको विकास गरिनु पर्दछ

### साँस्कृतिक नीति

नेपाली बृहत् शब्दकोश (२०५८)ले कला, साहित्य, इतिहास, भाषा, धर्म, दर्शन आदि विभिन्न विषय वा मूल्य परम्पराको समष्टि नामलाई संस्कृति<sup>102</sup> मानेको छ । मानवशास्त्रीहरूको विचारमा मानव निर्मित मूर्त (Tangible) र अमूर्त ९क्षलतबलनष्वभि०<sup>103</sup> वस्तुहरूको सम्पूर्ण योग नै संस्कृति हो । आकार-प्रकार हुने र छुन सकिनेलाई मूर्त र आकार-प्रकार नहुने र छुन नसकिनेलाई अमूर्त भनिन्छ । भवन, धार्मिक संस्था (मन्दिर, मस्जिद, गुम्बा), सडक आदि मूर्त संस्कृति हुन् भने सामाजिक मूल्य, मान्यता, परम्परा, भाषा, भेषभूषा, रहनसहन, प्रथा, कानून, शीप, कला आदि अमूर्त संस्कृति हुन् । संस्कृति मानव निर्मित हुन्छ र समाज वा समुहमा सर्वस्वीकार्य हुन्छ, स्थापित पनि हुन्छ आदि ।

माथि मूर्त अमूर्त संस्कृतिको चर्चा भएको छ । युनेस्कोले सन् २००३ मा अमूर्त साँस्कृतिक सम्पदा संरक्षण सम्बन्धी महासन्धि पारित गरेको छ । यस अमूर्त साँस्कृतिक सम्पदाको संरक्षणको लागि व्यवस्था भएको महासन्धि (Convention for the Saveguarding of the Intangible Cultural Heritage 2003) लाई नेपालको व्यवस्थापिका-संसदको सम्पत् २०६६ माघ १२ गतेका दिन बसेको बैठकले अनुमोदन गरेको छ । यस महासन्धिले अमूर्त साँस्कृतिक सम्पदाको परिभाषा निम्नानुसार प्रस्तुत गरेको छ:

*The 'intangible cultural heritage' means  
the practices, representations, expressions,*

102 संस्कृति ना. कला, साहित्य, इतिहास, भाषा, धर्म, दर्शन आदि विभिन्न विषय वा मूल्य परम्पराको समष्टि नाम । नेपाली बृहत् शब्दकोश (२०५८)

103 मूर्त र अमूर्त सम्पदालाई भौतिक र अभौतिक वा स्पृश्य र अस्पृश्य पनि भन्ने गरेको पाइन्छ ।

*knowledge, skills - as well as the instrument, objects, artifacts and cultural spaces associated therewith- that communities, groups and, in some cases, individuals recognize as part of their cultural heritage.*

*'This intangible cultural heritage, transmitted from generation to generation, is constantly recreated by communities and groups in response to their environment, their interaction with nature and their history, and provides them with a sense of identity and continuity, thus promoting respect for cultural diversity and human creativity.*

यस महासन्धिले संस्कृतिको परिभाषा पनि स्थापित गरेको छ र अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदालाई ५ क्षेत्रमा वर्गीकरण गरेको छ<sup>104</sup>:

- (क) मौखिक परम्परा र अभिव्यक्तिसहित भाषा जो अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदाको सवारीको रूपमा रहेको छ ।
- (ख) प्रदर्शनी कला ।
- (ग) सामाजिक अभ्यास, रीतिरिवाज र चाडपर्वहरू ।
- (घ) प्रकृति र ब्रम्हाण्डसँग सम्बन्धित ज्ञान र अभ्यास ।
- (ङ) परम्परागत हस्तकला ।

सामाजिक प्राणीको रूपमा मानव समुदायले आर्जन गरेको ज्ञान-विज्ञान र प्रविधि, भाषा, मौखिक परम्परा र अभिव्यक्ति, प्रदर्शनी कला, सामाजिक प्रथा र अभ्यास, चाडपर्व, रीतिरिवाज, मूल्य-मान्यता, विश्वास पद्धति, परम्परागत कला जस्ता विषयवस्तु संस्कृतिभिन्न पर्दछ । आइएलओ महासन्धि १६९ ले संस्कृतिलाई अन्तर-सम्बन्धित मुद्दा (Cross-

104 (a) Oral tradition and expression, including language as a vehicle of the intangible cultural heritage; (b) Performing arts; (c) Social practices, rituals and festive events; (d) Knowledge and practices concerning nature and the universe and (e) Traditional craftsmanship

cutting Issues) को रूपमा व्यवस्थित गरेको छ। संस्कृतिको संरक्षण, सम्वर्धन र विकासको योजना निर्माणको सन्दर्भमा यस विषयको अध्ययन गरिएको छ। हालसम्म आदिवासी जनजातिहरूको सांस्कृतिक सम्पदाहरूको सूची तयार गरिएको छैन।

### ऐतिहासिक पक्ष

पृथ्वीनारायण शाहको तथाकथित एकीकरणपछि, नेपाल एक भाषा, एक धर्म र एक संस्कृतिको पक्षपती राष्ट्रको रूपमा उदय हुन थाल्यो। तत्कालीन शासक जातिले आफ्नो भाषालाई राष्ट्रिय भाषा, आफ्नो धर्मलाई राष्ट्रिय धर्म र आफ्नो संस्कृतिलाई राष्ट्रिय संस्कृति र आफ्नो मूल्य-मान्यतालाई राष्ट्रिय मूल्य-मान्यताको रूपमा स्थापित गरे। यसो हुँदा खसभाषा (पछि नेपाली भाषा भनिएको), हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति र हिन्दू मूल्यमान्यताले एकछत्र साम्रज्य कायम गर्न थाले। मुलुकका अन्य भाषा, धर्म, संस्कृति, संस्कार, चिन्तन तथा दर्शन सबैलाई गैरनेपाली र गैरराष्ट्रिय बनाउने प्रयत्न भयो। २००७ मा प्रजातन्त्रको स्थापनापछि पनि संस्कृतिको संरक्षण गर्न सरकारले कुनै चासो देखाएको देखिदैन। अभ्र पंचायती कालमा 'एक भाषा एक भेष, एक राजा एक देश'को नारा कालिला बालबालिकालाईसमेत घोकाउन र घन्काउन लगाएको पाइन्छ। सत्ता केन्द्रित सांस्कृतिक चिन्तन मूलधारको रूपमा स्थापना गर्दै विस्तार गरेको थियो।

वि.सं. २०४७ मा पंचायती सत्ता ढालेपछि बनेको नेपाल अधिराज्यको संविधान २०४७ मा पहिलो पल्ट 'नेपाल बहुजातीय, बहुभाषिक... अधिराज्य' बन्थो तर बहुधार्मिक तथा बहुसांस्कृतिक हुन सकेन, हिन्दू अधिराज्य नै कामय रह्यो।<sup>105</sup> यसले आदिवासी जनजातिहरूले पञ्चायती व्यवस्था ढलेको, देशमा प्रजातन्त्रको पुनस्थापना भएको, परिवर्तन आएको अनुभूति गर्न पाएनन् विशेषगरी धार्मिक-संस्कृतिको सन्दर्भहरूमा। यस संविधानको मौलिक हकको धारा ११(२) मा 'आफ्नो भाषा, लिपि र संस्कृतिको संरक्षण र सम्वर्धन गर्ने अधिकार

105 नेपाल एक बहुजातीय, बहुभाषिक, प्रजातान्त्रिक, स्वतन्त्र, अभिभाज्य, सार्वभौमसत्तासम्पन्न, हिन्दू, सवैधानिक राजतन्त्रात्मक अधिराज्य हो। धारा ४(१) नेपाल अधिराज्यको संविधान २०४७

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १४४

हुनेछ' भनिएता पनि यसबारे कुनै नीति तथा कार्यक्रम बनाएर लागु गरेको देखिएन । मूलधारका संस्कृतिलाई पछ्याउने खालका सांस्कृतिक क्रियाकलापलाई प्रोत्साहित गरेको पाइन्छ । राष्ट्रिय सांस्कृतिक नीति बनाउने सौचसम्म बाहिर आएको पाइदैन ।

### अद्यावधिक स्थितिको समीक्षा

महासन्धि १६९ मा संस्कृति अन्तरसम्बन्धित मुद्दाको रूपमा जताततै छरिएको छ । उदाहरणको लागि २(२), ४(१), ५(१), ७(३), १०(१) आदि धाराहरूलाई लिन सकिन्छ ।<sup>६६</sup> यी धाराहरूमा निम्न प्रावधानहरू रहेका छन् :

धारा २(२) आदिवासी जनजातिका ... सांस्कृतिक पहिचान ...  
प्रति सम्मान राख्दै उनीहरूका .... सांस्कृतिक  
अधिकारको पूर्ण कार्यान्वयनको प्रवर्द्धन गर्ने ।

धारा ४(१) आदिवासी जनजातिका ..... संस्कृति.... सुरक्षाको  
लागि विशेष उपायहरू पारित गर्ने ।

धारा ५(१) उनीहरूका सांस्कृतिक ... मूल्य तथा अभ्यासहरूलाई  
मान्यता दिइ संरक्षण गर्ने ।

धारा ७(३) उनीहरूको सहयोगमा योजनावद्ध विकासका  
कामकार्यवाहीहरूबाट उनीहरूमा पर्ने .....

106 महासन्धी १६९ मा संस्कृति सम्बन्धी व्यवस्था यी धाराहरूमा छन् - धारा २(२) आदिवासी जनजातिको सामाजिक तथा सांस्कृतिक पहिचान, परम्परा तथा प्रथा र संस्थाहरूप्रति सम्मान राख्दै उनीहरूका समाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक अधिकारहरूको पूर्ण कार्यान्वयनको प्रवर्द्धन गर्ने, धारा ४(१) आदिवासी जनजातिका संस्थाहरू, सम्पत्ति, श्रम, संस्कृति र वातावरण तथा व्यक्तिहरूको सुरक्षाको लागि उपयुक्तता अनुसार विशेष उपायहरू पारित गरिनेछन् । धारा ५(१) यस महासन्धीका व्यवस्थाहरू लागू गर्दा आदिवासी जनजातिका सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक तथा अध्यात्मिक मूल्य तथा अभ्यासहरूलाई मान्यता दिइ संरक्षण गरिनेछ र उनीहरूले समुहगत तथा व्यक्तिगत रूपमा भेल्लु परेका समस्याहरूको प्रकृतिलाई समुचित ध्यान दिइनेछ। धारा १०(१) आदिवासी जनजाति समुदायका सदस्य उपर सामान्य कानूनले दण्डसजाय लागू गर्दा उनीहरूको आर्थिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशिष्टताहरूलाई ध्यान दिइनेछ आदि ।

सांस्कृतिक प्रभाव मूल्यांकन गर्न अध्ययनहरू गर्ने ।

धारा १०(१) आदिवासी जनजाति समुदायका सदस्य उपर सामान्य कानूनले दण्डसजाय लागू गर्दा उनीहरूको आर्थिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशिष्टताहरूलाई ध्यान दिइनेछ ।

माथिका यी प्रावधानहरूले मूलतः निम्न मुद्दालाई उठाएका छन्:

- (१) आदिवासी जनजातिको सांस्कृतिक अधिकारलाई प्रवर्द्धन गर्ने,
- (२) उनीहरूको संस्कृतिको सुरक्षाको लागि विशेष उपायहरू पारित गर्ने,
- (३) उनीहरूको सांस्कृतिक मूल्य तथा अभ्यासलाई मान्यता दिइ संरक्षण गरिने,
- (४) आदिवासी जनजातिलाई दण्डसजाय लागू गर्दा उनीहरूको सांस्कृतिक विशिष्टताहरूलाई ध्यान दिने,
- (५) योजनावद्ध विकासबाट उनीहरूमा पर्ने सांस्कृतिक प्रभावको उनीहरूकै सहभागितामा अध्ययन गर्ने आदि ।

महासन्धि १६९ का यी प्रावधानहरूलाई सम्बोधन गर्न नेपालको संविधान २०७२ को मौलिक हकको धारा ३२ (२) र (३) मा संस्कृति सम्बन्धी हकको व्यवस्था गरेको छ:

धारा ३२(२) प्रत्येक व्यक्ति र समुदायलाई आफ्नो समुदायको सांस्कृतिक जीवनमा सहभागी हुन पाउने हक हुनेछ ।

धारा ३२(३) नेपालमा बसोबास गर्ने प्रत्येक समुदायलाई आफ्नो भाषा, लिपि र संस्कृति, सांस्कृतिक सभ्यता र सम्पदाको सम्बर्धन र संरक्षण गर्ने हक हुनेछ ।

यसैगरी व्यवस्थापिका-संसदको सम्बत् २०६६ माघ १२ गतेका दिन बसेको बैठकले सन् २००३ मा सम्पन्न अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदाको

संरक्षणका लागि व्यवस्था भएको महासन्धि (Convention for the Safeguarding of the Intangible Cultural Heritage 2003) लाई अनुमोदन गरेको छ। यस महासन्धिले निम्न चारओटा उद्देश्य<sup>107</sup> राखेको छ:

- (क) अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदाको संरक्षण गर्ने;
- (ख) समुदाय, समुह र व्यक्तिसंग सम्बन्धित अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदाको सम्मान गर्ने कुराको सुनिश्चित गर्ने;
- (ग) अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदाको महत्वलाई स्थानीय, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय तहसम्म चेतना अभिवृद्धि गर्ने र परस्परिक समझदारी सुनिश्चित गर्ने र
- (घ) अन्तर्राष्ट्रिय सहयोग र सहयता उपलब्ध गराउने।

प्राज्ञ वैरागी काइँलाको अध्यक्षतामा गठित समितिले तयार गरेको नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ऐन, २०६४ व्यवस्थापिका-संसदबाट पारित भएको छ। यस ऐनको धारा ५ मा भाषा, साहित्य, संस्कृति, दर्शन तथा समाजशास्त्रका विषयमा अध्ययन तथा अनुसन्धान गरी मौलिक ग्रन्थ तयार गर्ने, प्रकाशन गर्ने, अनुवाद गर्ने, गोष्ठीसम्मेलन गर्ने, प्रदर्शनी गर्ने, विषयविज्ञहरूलाई सम्मान तथा पुरस्कार दिने, विद्वत्त्वृति दिने, सम्बन्धित विषयका संघसंस्थालाई सहयोग गर्ने आदि कार्यको व्यवस्था गरेको छ। यसका साथै नेपालका विभिन्न जातजातिका लोपोन्मुख भाषा र संस्कृतिको संरक्षण तथा सम्बर्धन गर्न प्राथमिकता दिने प्रावधान पनि यस ऐनमा रहेको छ।<sup>108</sup> यस ऐन अनुसार चैत्र २०६६ मा प्रज्ञासभाको

---

107 **Article 1:** The purposes of the Convention are: (a) to safeguard the intangible cultural heritage; (b) to ensure respect for the intangible cultural heritage of the communities, groups and individuals concerned; (c) to raise awareness at the local, national and international levels of the importance of the intangible cultural heritage, and of ensuring mutual appreciation thereof; (d) to provide for international cooperation and assistance.

108 नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठान ऐन २०६४, धारा ५(ख) - नेपालका सबै भाषा, साहित्य, संस्कृति, दर्शन तथा समाजिकशास्त्र सम्बन्धी विभिन्न विषयमा अध्ययन तथा अनुसन्धान गरी उपयोगी ग्रन्थ एवं कृति तयार गर्ने गराउने। (ग) - नेपालका सबै भाषा, साहित्य, संस्कृति, दर्शन तथा सामाजिकशास्त्र सम्बन्धी विभिन्न

गठन पनि भइसकेको छ । यसबाट आदिवासी जनजातिको मौलिक संस्कृतिको संरक्षण र सम्वर्धनमा महत्वपूर्ण योगदान पुग्ने आशा गर्न सकिन्छ ।

आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान ऐन २०५७ मा दफा ५ र ६ मा आदिवासी जनजातिको संस्कृतिको संरक्षण र सम्वर्धन गर्ने, आवश्यक कार्यक्रम तर्जुमा गर्ने र सोको कार्यान्वयन गर्ने वा गराउने, विकास गर्ने, परिचय गराउने, अभिलेखालय तथा संग्रहालय स्थापना गर्ने व्यवस्था गरिएको छ ।<sup>109</sup> यस ऐन अनुरूप आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठानले स्थापना कालदेखि नै आदिवासी जनजातिको संस्कृतिको संरक्षण र सम्वर्धनको लागि केही कार्य गरेको छ तर के कति उल्लेखनीय कार्य भयो यसको कार्यप्रगति बाहिर ल्याएको देखिदैन ।

---

विषयमा अनुसन्धानात्मक तथा मौलिक कृतिहरूको सिर्जना एवं प्रकाशन गर्ने गराउने । (ज) - नेपालका विभिन्न जाति तथा समुदायका साहित्य, लिपि, संस्कृति तथा लोकोक्तिको सम्वर्द्धन र संरक्षण गर्ने । (ठ) - नेपालका सबै भाषा, विभिन्न विदेशी भाषा र नेपालमा बोलिने भाषामा विश्वकोश तथा शब्दकोश तयार गरी प्रकाशन गर्ने तथा नेपालका सबै भाषालाई सम्वृद्ध र बेभमशाली बनाउन विभिन्न शब्द तथा शब्दावलीको सिर्जना गरी प्रचलनमा ल्याउने । (ड) - भाषा, साहित्य, संस्कृति, दर्शन तथा सामाजिकशास्त्रका विषयमा यौगदान दिने स्थानीय लेखक, साहित्यकार, सामाजिकशास्त्री, संस्कृतिविद तथा सम्वन्धित अन्य संस्थाहरूको विकासमा सहयोग पुर्याउने । (त) - नेपालका विभिन्न जातजातिका लोपोन्मुख भाषा र संस्कृतिको संरक्षण तथा सम्वर्द्धन गर्न प्राथमिकता दिने ।

109 आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान ऐन २०५७ को दफा ५(ख) आदिवासी/ जनजातिको भाषा, लिपि, संस्कृति, साहित्य, कला, इतिहासको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्ने, दफा ६(क) आदिवासी/जनजातिको भाषा, लिपि, साहित्य, इतिहास, कला, संस्कृति, परम्परागत सीप तथा प्रविधिको प्रवर्द्धन तथा संरक्षणका लागि आवश्यक कार्यक्रम तर्जुमा गर्ने र सोको कार्यान्वयन गर्ने वा गराउने, (ख) आदिवासी/जनजातिको भाषा लिपि, साहित्य, इतिहास, कला, परम्परा र संस्कृतिको अध्ययन तथा अनुसन्धान गर्ने र त्यस्तो भाषा, लिपि, इतिहास, कला, साहित्य, संस्कृति र परम्परालाई विकास गर्ने, (च) आदिवासी/ जनजातिको भाषा, संस्कृति, इतिहास, परम्परालाई परिचय गराउने अभिलेखालय तथा संग्रहालय स्थापना गर्ने ।



नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १४८

यसैगरी स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन-२०५५ र निमयावली (२०५६) ले पनि दफा २८घ(३) र दफा ९६घ(३)<sup>110</sup> मातृभाषामा शिक्षाबारे व्यवस्था गरेको छ तर यी दफा अनुसार कुनै गाविस वा नगरपालिकाभित्रका संस्कृति र सांस्कृतिक सम्पदा संरक्षणका लागि के कस्ता कार्य भइरहेका छन् वा भए कतै सुन्न वा प्रकाशनमा आएनन् । यस अध्ययनको क्रममा पनि कुनै पनि सहभागीहरूले यसबारे जानकारी दिएनन् । ऐनअन्तर्गत तयार गरिएको जिल्ला विकास समिति अनुदान संचालन कार्यविधि २०६६ र गाउँ विकास समिति अनुदान संचालन कार्यविधि २०६६ मा पनि मातृभाषामा शिक्षाको लागि कुनै दफाको व्यवस्था गरेको छैन । देशको मूल कानून संविधानमा हुने, स्थानीय स्वायत्त शासन ऐनमा हुने तर कार्यविधिमा नुहने यसलाई अनौठो नै मान्ने वा संस्कृति विरुद्धको षडयन्त्र? विषय मननीय छ ।

राष्ट्रिय योजना आयोगद्वारा प्रस्तुत तीन वर्षीय अन्तरिम योजना (२०६४/६५-२०६६/६७) मा 'राष्ट्रिय सांस्कृतिक नीतिको विकास गरी राष्ट्रकै धरोहरका रूपमा रहेका आदिवासी जनजातिहरूको भाषा, धर्म र संस्कृतिको संरक्षण र सम्वर्धन गरिनेछ'<sup>111</sup> भनिएको छ । यस योजनामा लोपोन्मुख आदिवासी जनजातिका भाषा, संस्कृतिहरूको संरक्षण, सम्वर्धन र सचेतनाका निम्ति अध्ययन अनुसन्धान कार्यक्रम संचालन गर्ने, आदिवासी जनजातिका भाषा संस्कृति तथा सम्पदाहरूकै संरक्षण र सम्वर्धनका निम्ति सन्दर्भ सामग्री तयार गर्ने आदि नीति तथा कार्यक्रम उल्लेख छ तर यी नीति तथा कार्यक्रमहरू व्यवहारमा अनुवाद हुन सकेन । यस योजनाले राष्ट्रिय सांस्कृतिक नीति तयार गरिने<sup>112</sup> भनिए अनुरूप राष्ट्रिय सांस्कृतिक नीति २०६७ तयार गरेको छ तर आदिवासी जनजाति केन्द्रित कार्यनीति र कार्ययोजना तयार हुन सकेको छैन ।

---

110 दफा २८घ(३)मा गाउँ विकास क्षेत्रभित्र मातृभाषामा प्राथमिक तहको शिक्षा उपलब्ध गराउन सहयोग गर्ने' र दफा ९६घ(३)मा नगरपालिका क्षेत्रभित्र मातृभाषामा प्राथमिक तहको शिक्षा उपलब्ध गराउन सहयोग गर्ने व्यवस्था गरेको छ ।'

111 राष्ट्रिय योजना आयोग, तीन वर्षीय अन्तरिम योजना (२०६४/६५-२०६६/६७), आदिवासी/जनजाति, रणनीतिहरू, पृ. ११७ ।

112 ऐं ।

## हूनौती तथा सम्भावनाहरू

देशको राष्ट्रिय सांस्कृतिक नीति तयार समेत नबनिसकेको अवस्थामा संस्कृति संरक्षण तथा सम्बर्धनका कुरा चुनौतीपूर्ण छ । ऐन कानून बनेका छन्, अपुरो छ, कार्यान्वयन भएको देखिदैन । कैयौं आदिवासी जनजातिहरू पहिचानै नभइसकेको अवस्था छ । पहिचान नभएको जाति समुहलाई सहयोग गर्ने नीति तथा क्रियाकलाप नेपाल आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठानको देखिएको छैन । ती पहिचान नभएका आदिवासी जनजातिहरूको मौलिक संस्कृति लोपोन्मुख अवस्थामा पुगेको छ । यसलाई कसरी संरक्षण गर्ने यो चुनौतीको रूपमा उभिएको छ । दोस्रो तीन वर्षीय अन्तरिम योजनाले पनि राष्ट्रिय सांस्कृतिक नीति तयार गर्ने नीति<sup>113</sup> लिएको छ । हुन त यो नीति तयार गर्ने प्रतिवद्धता पहिलो तीन वर्षीय अन्तरिम योजनाले पनि लिएको थियो । विभिन्न स्थानमा सांस्कृतिक हस्तक्षेप र आक्रमण कार्य रोकिएको छैन । हालै धनकुटामा परम्परागत रूपमा बौद्ध धार्मिक स्थल छ्योर्तेन भत्काएको छ र विरोध गर्दा थुनिएको समाचार प्रकाशमा आएको छ । राज्यले मूलधारका संस्कृति लादने कार्य पनि रोकिएको छैन । राजाको स्थानलाई राष्ट्रपतिले विस्थापित मात्र गरेको छ र धर्म निरपेक्षको अनुभूति राष्ट्रप्रमुखले दिनसकेको छैन । नयाँ वन्ने संविधानमा संस्कृति सम्बन्धी प्रष्ट व्यवस्था हुन आवश्यक छ ।

## अबको बाटो

आदिवासी जनजातिको आँखाबाट हेर्दा गणतन्त्रको स्थापनापछि पनि सांस्कृतिक परिदृष्यमा खासै परिवर्तन भएको देखिदैन । पञ्चयतकालिन संस्कृति र शैलीले नै निरन्तरता पाइरहेकै देखिन्छ । अब आदिवासी जनजातिलाई परिवर्तनको अनुभूति दिन अन्तर्राष्ट्रिय श्रम सङ्गठनको महासन्धि १६९ ले व्यवस्था गरेको निम्न पाँच ओट प्रावधानलाई ध्यानमा राखेर कार्ययोजना निर्माण र कार्यान्वयन गर्न आवश्यक छ -

### (१) राष्ट्रिय सांस्कृतिक नीति (National Cultural Policy)

113 दोस्रो तीन वर्षीय अन्तरिम योजनाले पनि राष्ट्रिय सांस्कृतिक नीति तयार गर्ने नीति, पृ. १४० ।

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १५०

लाई अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धी अनुकुल हुने गरी परिमार्जन गरिनुपर्दछ ।

- (२) आदिवासी जनजातिको सांस्कृतिक अधिकारलाई प्रवर्द्धन गर्ने खालका कार्ययोजना बनाउनुपर्दछ ।
- (३) उनीहरूको संस्कृतिको सुरक्षाको लागि अधिकार सम्पन्न एउटा कार्यदलको गठन गरिनुपर्दछ ।
- (४) उनीहरूको सांस्कृतिक मूल्य तथा अभ्यासलाई मान्यता दिइ संरक्षण गरिने कार्ययोजना बनाउनुपर्दछ ।
- (५) योजनावद्ध विकासबाट उनीहरूमा पर्ने सांस्कृतिक प्रभावको उनीहरूकै सहभागितामा अध्ययन गर्नुपर्दछ ।
- (६) सबै आदिवासी जनजातिहरूको अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदाको सूची तयार गरी अध्ययन अनुसन्धान थाल्नुपर्दछ ।

यसैगरी महासन्धि १६९ संग सम्बन्धित राष्ट्रिय कार्ययोजना-२०६६ भित्र आदिवासी संस्कृतिबारे प्रष्ट कार्ययोजना छैन । कार्ययोजना बनाएर यथाशिर्घ कार्यान्वयन गर्नु आवश्यक छ । हालको राष्ट्रिय संस्कृति नीति २०६७ लाई वर्तमान संविधान अनुरूप र आदिवासी जनजातिको सक्रिय सहभागितामा परिमार्जन गरिनु पर्दछ । लोपोन्मुख तथा सूचीमा नपरेका आदिवासी जनजातिको संस्कृतिको संरक्षण तथा सम्बर्धनको लागि पनि ठोस कार्यक्रमसहित सरकारी पहल हुन आवश्यक छ ।

### अन्त्यमा

भाषा, शिक्षा र संस्कृतिबारे छलफल गर्ने क्रममा नै अबको बाटो उपशीर्षकमा सम्बन्धित विषयको सुझाव प्रस्तुत गरिएको छ । यहाँ केही प्रमुख सुझाव पुनः दोहोर्याउन चाहन्छु:

- (१) भाषा र शिक्षा सन्दर्भमा हालसम्म नेपालको राष्ट्रिय नीति नभएकोले यसको निर्माण गरिनु पर्दछ ।
- (२) महासन्धि १६९ लाई आफ्नै तौरतरिकाबाट बुझिरहेको हुनाले

अब नेपालको ऐतिहासिक धराताल, राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रिय परिप्रेक्ष्यमा यसलाई बुझ्न आवश्यक छ र एउटै अर्थ लाग्ने आधिकारिक व्याख्या गरिनु पर्दछ ।

- (२) नेपालमा लामो समयदेखि एकात्मक र केन्द्रीकृत प्रणालीमा हुर्केको हुनाले परिवर्तित सन्दर्भको धरातल, परिवेश, लोकतान्त्रिक मूल्यमान्यता र समावेशी एवं बहुलवादी प्रक्रियाबाट भाषा, शिक्षा र संस्कृतिवारे सोच्न र हल गर्ने प्रयास गरिनु आवश्यक छ । यसका लागि सबै क्षेत्रकालाई प्रवृत्ति परिवर्तन ९व्रततप्तगमगलर्वा ऋजबलनभ० जस्ता तालिम दिनु आवश्यक छ ।
- (४) सरकारले महासन्धि १६९ सम्बन्धी हेर्ने फोकल पर्सनहरू तोके पनि ती फोकल पर्सनहरूको फेरबदल भइरहने समस्या देखा परेको देखिन्छ । अतः मन्त्रालयहरूले यसतर्फ ध्यान दिन पर्दछ ।
- (५) लोपोन्मुख भाषाको पहिचान गरी ती भाषाहरूको संरक्षण र सम्वर्धनका साथै मातृभाषी समुदायमा मातृभाषामा शिक्षाको माग बढेको हुनाले इमानदारीपूर्वक बहुभाषिक शिक्षा निर्देशिका २०६६ लागू गरिनु आवश्यक छ ।

### सन्दर्भ सामग्री

सरकारी अभिलेख - संविधान, ऐन, कानून, नीति-नियमावली तथा योजना आदि ।

नेपाल सरकार, नेपाल सरकारको वैधानिक-कानून २००४, काठमाडौं: गोरखापत्र ।

श्री ५ को सरकार, आन्तरिक शासन विधान २००७ काठमाडौं ।

श्री ५ को सरकार, नेपाल आन्तरिक शासन विधान २००७ काठमाडौं ।

श्री ५ को सरकार, नेपालमा शिक्षा: नेपाल राष्ट्रिय शिक्षा आयोगको विवरण (वि.सं. २०११), सरदार रूद्रराज पाण्डे, काठमाडौं: प्रकाशन विभाग, कलेज अफ एजुकेशन ।

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू • १५२

श्री ५ को सरकार, सर्वाङ्गीण राष्ट्रिय शिक्षा समितिको रिपोर्ट (असार २०१८), विश्ववन्धु थापा, काठमाडौं: शिक्षा मन्त्रालय ।

श्री ५ को सरकार, नेपाल अधिराज्यको संविधान २०१५ काठमाडौं: कानून तथा संसदीय प्रवन्ध मन्त्रालय ।

श्री ५ को सरकार, नेपालको संविधान २०१९ काठमाडौं: कानून किताब व्यवस्था समिति ।

श्री ५ को सरकार राष्ट्रिय शिक्षा पद्धति २०२८-२०३२ सम्मको योजना (२०२८), काठमाडौं: शिक्षा मन्त्रालय ।

श्री ५ को सरकार, शिक्षा ऐन २०२८ (संशोधनसहित २०६३) ।

श्री ५ को सरकार शाही उच्च शिक्षा आयोगको प्रतिवेदन, (साउन २०४०) रणधीर सुब्बा, काठमाडौं: शाही उच्च शिक्षा आयोग ।

श्री ५ को सरकार, नेपाल अधिराज्यको संविधान २०४७ काठमाडौं: कानून किताब व्यवस्था समिति ।

श्री ५ को सरकार, नेपाल सन्धी ऐन, २०४७ काठमाडौं : कानून किताब व्यवस्था समिति ।

श्री ५ को सरकार, नेपाल अधिराज्यको संविधान, २०४७, काठमाडौं: कानून किताब व्यवस्था समिति ।

श्री ५ को सरकार राष्ट्रिय शिक्षा आयोगको प्रतिवेदन २०४९, (असार २०४९) गोविन्दराज जोशी, काठमाडौं: राष्ट्रिय शिक्षा आयोग ।

श्री ५ को सरकार, राष्ट्रिय सञ्चार नीति २०४९ ।

श्री ५ को सरकार राष्ट्रियभाषा नीति सुझाव आयोगको प्रतिवेदन, (२०५०) तिलविक्रम नेम्बाङ, शिक्षा मन्त्रालय, काठमाडौं ।

श्री ५ को सरकार, 'रेडियो नेपालबाट राष्ट्रिय भाषाहरूमा समाचार प्रसारण गर्ने बारे सुझाउ समितिको प्रतिवेदन' (२०५०), नरहरि आचार्य, काठमाडौं: सुझाव समिति, रेडियो नेपाल सिंहदरवार ।

श्री ५ को सरकार, 'राष्ट्रिय जनजाति उत्थान प्रतिष्ठान कार्यदलको प्रतिवेदन' (२०५३), सन्तबहादुर गुरुङ, ललितपुर : राष्ट्रिय जनजाति उत्थान प्रतिष्ठान कार्यदलको कार्यालय ।

श्री ५ को सरकार, राष्ट्रिय भाषामा प्राथमिक शिक्षा प्रतिवेदन, (२०५४), रामावतार यादव, भक्तपुर: पाठ्यक्रम विकास केन्द्र ।

श्री ५ को सरकार, उच्चस्तरीय राष्ट्रिय शिक्षा आयोगको प्रतिवेदन-२०५५,

(असार २०५५) अर्जनरसिंह के. सी., काठमाडौं : उच्चस्तरीय राष्ट्रिय शिक्षा आयोग ।

श्री ५ को सरकार, स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन २०५५ र निमयावली २०५६ ।

श्री ५ को सरकार, आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान ऐन, २०५७ ।

श्री ५ को सरकार, शिक्षा सम्वन्धी उच्चस्तरीय कार्यसमितिको प्रतिवेदन, : विद्यालय शिक्षाको प्रस्तावित कार्यनीति र कार्ययोजनाको अवधारणापत्र (असार २०५८), डा. निर्मलप्रशाद पाण्डे (अध्यक्ष) काठमाडौं ।

श्री ५ को सरकार, 'बाइलिंगुअल इडुकेसन', अध्ययन प्रतिवेदन आ.वा.२०५८/२०५९: नेपाली रूपान्तर (२०५९), काठमाडौं: शिक्षा विभाग, अनुसन्धान तथा विकास शाखा ।

श्री ५ को सरकार, सबैको लागि शिक्षा राष्ट्रिय कार्ययोजना २००१-२०१५ (२००४) ।

श्री ५ को सरकार, प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम कक्षा १-३ (२०६२), पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, सानोठिमी, भक्तपुर ।

नेपाल सरकार, नेपालमा विद्यालय शिक्षाका लागि राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप (२०६३) सानोठिमी, भक्तपुर: पाठ्यक्रम विकास केन्द्र ।

नेपाल सरकार, नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३, काठमाडौं : कानून किताब व्यवस्था समिति ।

नेपाल सरकार, नेपालमा विद्यालय शिक्षाका लागि राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप (२०६३), सानोठिमी, भक्तपुर: पाठ्यक्रम विकास केन्द्र ।

नेपाल सरकार, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान ऐन, २०६४ ।

नेपाल सरकार, सूचनाको हक सम्वन्धी ऐन, २०६४ ।

नेपाल सरकार, तीन वर्षीय अन्तरिम योजना (२०६४/६५-२०६६/६७) (२०६४) काठमाडौं : राष्ट्रिय योजना आयोग, सिंहदरवार ।

नेपाल सरकार, अन्तराष्ट्रिय श्रम सङ्गठन महासन्धि १६९ कार्यान्वयनका लागि राष्ट्रिय कार्ययोजना २०६६ (मस्यौदा) ।

नेपाल सरकार, अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदाको संरक्षणका लागि व्यवस्था भएको महासन्धि २००३ (२०६६) (Convention for the Safeguarding of the Intangible Cultural Heritage 2003).

### सन्दर्भ सामग्री - सामान्य

अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठनको आदिवासी जनजातिसंग सम्बन्धित महासन्धि नं. १६९ ।

आइएलओ (२०६६) अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठन महासन्धि १६९ कार्यान्वयनका लागि राष्ट्रिय कार्ययोजना २०६६ (मस्यौदा) ।

आदिवासी जनजातिसंग सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रिय श्रम सङ्गठनको नीति प्रवर्द्धन परियोजना (२०६५) अन्तर्राष्ट्रिय श्रम सङ्गठनको आदिवासी/जनजातिसंग सम्बन्धित महासन्धि नं. १६९ निर्देशिका काठमाडौं नेपाल ।

आदिवासी जनजातिको अधिकारसम्बन्धी संयुक्त राष्ट्रसंघीय घोषणापत्र (२००७) ।

काइँला, बैरागी (२०६२) 'आदिवासी जनजातिको परिप्रेक्ष्यमा पहिचानको राजनीति र भाषा' बहा जर्नल (२.२) ललितपुर: सोसल साइन्स वहा: ।

केन्द्रीय तथ्यांक विभाग (२००१) राष्ट्रिय जनगणनाको प्रतिवेदनहरू, काठमाडौं: केन्द्रीय तथ्यांक विभाग ।

गुरुङ, गोपाल (ई. १९८५) नेपालको राजनीतिमा अदेखा सच्चाइ, काठमाडौं: आफैं ।

गुरुङ, सन्तबहादुर, अध्यक्ष (२०५३) 'राष्ट्रिय जनजाति उत्थान प्रतिष्ठान कार्यदलको प्रतिवेदन' ललितपुर : राष्ट्रिय जनजाति उत्थान प्रतिष्ठान कार्यदलको कार्यालय ।

गुरुङ, हर्क (२००५) 'आदिवासी जनजाति सूचीकरण अवधारणा तथा अनुभव', आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठानद्वारा आदिवासी दिवस (९ अगस्त २००५) को उपलक्ष्यमा आयोजित गोष्ठीमा प्रस्तुत कार्यपत्र ।

गुरुङ, डा. हर्क र साथीहरू (२०००) जनजाति विकासको जुक्ति काठमाडौं: जनजाति विकास-समन्वय केन्द्र ।

देवकोटा, ग्रीष्मबहादुर (१९६०) नेपालको राजनीतिक दर्पण भाग १ र २, काठमाडौं: ध्रुवहादुर देवकोटा ।

नेपाल आदिवासी जनजाति महासंघ (२०६१) अन्तर्राष्ट्रिय श्रम सङ्गठन

१५५ ● अमृत योन्जन-तामाङ

महासन्धि नं. १६९ जनवकालत सहज पुस्तिका, काठमाडौं, नेपाल ।  
नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान (२०४०) नेपाली बृहत् शब्दकोश (पाँचौं  
संस्करण २०५८) ।

याखाराई, दूर्गाहाङ (ई. १९९६) ब्राह्मणवाद विरुद्ध जनजाति तथा  
उत्पीडित वर्ग काठमाडौं: धनरानी याखाराई ।

सुब्बा, डा. चैतन्यसहित (ई. २००२) 'राष्ट्रिय विकासमा आदिवासी/  
जनजाति: मूल मुद्दा, व्यवधान र अवसरहरू' (दसौं योजना २०५९-  
०६४ मा समावेशका लागि तर्जुमा गरिएको) काठमाडौं: सर्वाङ्घिक  
विकास अध्ययन केन्द्र ।

शर्मा, बालचन्द्र (२००८) नेपालको ऐतिहासिक रूप-रेखा (तेस्रो संस्करण  
२०३३), काठमाडौं ।

ILO 2009 *Indigenous and Tribal Peoples' Rights in  
Practice: A guide to ILO Convention No. 169 Program  
to Promote ILO Convention No. 169 (Pro 169)*  
International Labour Standards Departments

**सन्दर्भ सामग्री : भाषा**

अर्याल, कृष्णचन्द्र र वैजनाथ जोशी (वि.सं. १९७४) गोरखा भाषा,  
गोरखा एजेन्सी कार्यालय ।

काइँला, विरही (२०४९) लिम्बू भाषा र साहित्यको संक्षिप्त परिचय  
काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ।

काइँला, वैरागी, (२०५०) राष्ट्रियभाषा नीति सुझाव अयोगको प्रतिवेदन  
काठमाडौं: राष्ट्रियभाषा नीति सुझाव आयोग, कमलादी ।

पोखरेल, डा. माधवप्रसाद (२०५०) 'नेपालले अंगीकार गर्नुपर्ने भाषिक  
नीति र भाषिक योजना', प्रज्ञा ७९, काठमाडौं : नेपाल राजकीय  
प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ।

मल्ल, के. सुन्दर ( ई. २००२) 'नेपालमा भाषिक विभेद', डर्वान घोषणा  
र कार्ययोजना तथा नेपालमा जातीय विभेद काठमाडौं : जातीय  
विभेद विरुद्ध राष्ट्रिय मञ्च, नेपाल ।

माली, इन्द्र (२०५२) 'नेपाल भाषा हिजो र आज' सयपत्री वर्ष १.१  
काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ।



- नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १५६
- योन्जन-तामाङ, अमृत (२००६) नेपालका भाषाहरूको पहिचान, वर्तमान स्थिति र भाषा विकास योजना, काठमाडौं : आदिवासी भाषाविज्ञान समाज ।
- योन्जन-तामाङ, अमृत (२०६६) 'मातृभाषाबारे मातृभाषीहरूको अवधारणा', हचाडला काइ २०६६ काठमाडौं : नेपाल तामाङ विद्यार्थी घेदुङ ।
- लामा, सन्तवीर (१९५७), ताम्बा काइतेन त्वाई रिमठिम ।  
Cheruiyot, Kiplangat 'Our Languages are dying' One world wavesite.
- Nettle, Daniel and Suzanne Romaine, 'The Last Survivors' in <http://portal.unesco.org/education>.
- Hansson, Gerd 1991 *The Rai of Eastern Nepal: Ethnic and Linguistic Grouping Findings of the Linguistics Survey of Nepal* Kathmandu: LSN and CNAS.
- Nettle, Daniel and Suzanne Romaine, 'The Last Survivors' Issue 25.2.
- Rai, Vishnu S. 2005. 'Endangered Language, Maribund Language and Killer Language' *Contemporary Issues in Nepalese Linguistics*, Kathmandu: Linguistics Society of Nepal.
- सन्दर्भ सामग्री : शिक्षा
- मावुहाङ, बालकृष्ण, किरण रञ्जित र जयन्ती सुब्बा (ई २००७) विद्यालयस्तर (कक्षा १ -१२) को पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक तथा शिक्षक निर्देशिका अध्ययन - आदिवासी जनजाति दृष्टिकोणमा काठमाडौं: नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ।
- मानन्धर, हरिशंकर (२०५९) 'मातृभाषामा प्राथमिक तहको पाठ्यक्रम: पाठ्यक्रम विशेषज्ञहरूको दृष्टिकोण' (Primary Education Curriculum in Mother Tongue: A view of Curriculum Specialists) (शैजविकेमा प्रस्तुत अध्ययन-पत्र) सानोठिमी, भक्तपुर ।
- योन्जन-तामाङ, अमृत (२०६४) 'मातृभाषामा शिक्षाको आवश्यकता, शैक्षिक नीति र विद्यमान चुनौतीहरू' अनौपचारिक क्षेत्र सेवा केन्द्र (इन्सेक) द्वारा भदौ २६ गते २०६४ काठमाडौंमा आयोजित '

मातृभाषामा शिक्षाको आवश्यकता र विद्यमान चुनौतिहरू' विषयक अन्तरक्रियात्मक कार्यक्रममा प्रस्तुत छलफलपत्र ।

योन्जन-तामाङ, अमृत (२०६५) 'मातृभाषामा शिक्षा: लक्ष्यतिर उन्मुख', शिक्षा स्मारिका, सानोठिमी : शिक्षा विभाग ।

योन्जन-तामाङ, अमृत (२०६५) 'नेपालमा बहुभाषिक शिक्षा: स्थिति, चुनौती र सम्भावनाहरू', शिक्षा जर्नल, सानोठिमी : पाठ्यक्रम विकास केन्द्र ।

योन्जन-तामाङ, अमृत, इना नुरमेला, डेभिड हफ र धिरज गुरुङ (२०६५) 'नेपालमा बहुभाषिक शैक्षिक कार्यक्रम : शिखरतिरको यात्रा प्रारम्भ', सानोठिमी: शिक्षा विभाग ।

Awasthi, Lava Deo (2004) 'Exploring Monolingual School Practices in Multilingual Nepal', a thesis submitted for the Degree of Doctor of Philosophy at Danish University of Education Copenhagen, Denmark.

CRED (July 2005) 'Mother Tongue Intervention at Primary Level - A Study Report' submitted by Centre for Research, Education and Development (CRED) to Department of Education, Sanothimi.

Government of Nepal, Ministry of Education '*School Sector Reform Plan 2009-2015*' Volume I May 15, 2007, Kathmandu

GoN (July 2007) 'Inception Report: Multilingual Education Program for all non-Nepali Speaking Students for Primary Schools in Nepal' MLE Program, Department of Education, Inclusive Education Section, Sanothimi, Bhaktapur.

Koirala, Bidhya Nath, Samira Luitel and Rom Pd Bhattarai, (June 1992) 'Teaching through Mother Tongue in Primary Schools of Nepal', Kathmandu: CERID.

Koirala, Bidhya Nath, Hemraj Adhikari and Kedar Pd Sharma (Nov. 2001) 'Bilingual Education - A Study Report' submitted by Cooperation Hands in Restoration, Advancement and Growth (CIRAG) to Department of Education, Sanothimi.

Mohonty, Ajit, Minati Panda, Robert Phillipson and Tove

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १५८

Skutnabb-Kangas (2008) *Multilingual Education for Social Justice - Globalizing the Local* New Delhi: Orient BlackSwan.

**Project Document** for Finnish Technical Assistance to the Implementation of the 'Bilingual Education Programme for all Non-Nepali Speaking Students of Primary Schools of Nepal', Final, May 2006, Ministry for Foreign Affairs of Finland.

(Footnotes)

1 कोषक भित्र राखिएको सङ्ख्याले उक्त भाषाको वक्ताको सङ्ख्या जनाउँछ ।